पूज्यश्री का इचलकरंजी में चातुर्मास प्रवेश सानन्द सम्पन्न
श्री जैन श्वेतांबर मणिधारी जिनचंद्रसुरी दादावाडी संघ, इचलकरंजी
स्वर्णिम चातुर्मास
गुरुजी अमारो अंतरनाद.....
सन् 1998 से लगातार प्रकाशित जहाज मन्दिर का मुख-पत्र
जहाज मन्दिर
अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
वर्ष : 11
अंक : 5
5 अगस्त : 2014
मूल्य : 20 रु.

इचलकरंजी में चातुर्मास प्रवेश
की झलकियां

आगम मंजूषा

आचार्य भद्रबाहुसूरि

संजोग सिद्धीइ फलं वयंति, न हु एग चक्केण रहो पयाइ।
अंधो य पंगू य वणे समिच्चा,ते संपउत्त नगरं पविट्ठा॥

आवश्यक निर्युक्ति गाथा 102

संयोगसिद्धि (ज्ञान-क्रिया का संयोग) ही फलदायी (मोक्ष रूप फल देने वाला) होता है। एक पहिये से कभी रथ नहीं चलता। जैसे अंध और पंगु मिलकर वन के दावानल से पार होकर नगर में सुरक्षित पहुंच गये, इसी प्रकार साधक भी ज्ञान और क्रिया के समन्वय से ही मुक्ति-लाभ करता है।

परम आदरणीय संघनायक श्रेष्ठिप्रवर संघवी
श्री पुखराजजी छाजेड
के आकस्मिक स्वर्गवास पर
श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मंदिर मांडवला की ओर से
अश्रुपूरित श्रद्धांजली

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	07
4. श्रमण चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	11
5. योग : विनियोग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	16
6. हमारे भाया : एक प्रकाश स्तंभ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	18
7. स्मृतियों के आईने में 'भाया'	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	20
8. आत्मीयता की मिशाल	मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा.	27
9. एक गौरव पुरुष	मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा.	29
10. भाया : एक विशिष्ठ श्रावक	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	30
11. वात्सल्य पुरुष की अमिट यादें	साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.	38
12. राष्ट्रीय प्रतीक बनाम छद्म धर्मनिरपेक्षता	खुशालचंद बागरेचा	42
13. पर्युषण महिमा	मुमुक्षु शुभम् लूंकड़	43
14. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	44
15. तत्त्वावबोध	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	45
16. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	46
17. समाचार दर्शन	संकलन	47-59
18. जहाज मंदिर पहेली 98 का सही उत्तर		60
19. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-100	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	61
20. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	66

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 5 5 अगस्त 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.
अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ	: 7,000 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

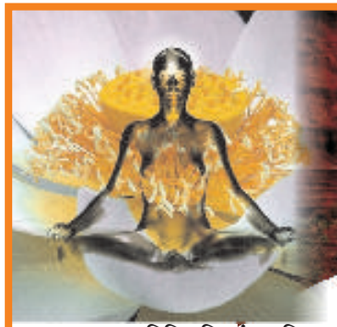

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

अपनी भूल स्वीकार करें

परिस्थितियाँ व्यक्ति को प्रभावित करती है। और परिस्थिति कभी एक जैसी नहीं होती। लगातार बदलाव आता है। कभी छांव का आनंद मिलता है तो कभी धूप में तपना भी पड़ता है।

कभी सम्मान प्राप्त होता है तो कभी अपमान भी झेलना होता है।

विपरीत परिस्थितियों में ही हमारे स्वभाव की परीक्षा होती है।

प्राय: अनुकूलता में हम परम सहजता से रहते हैं। पर ज्योंहि थोडी प्रतिकूलता प्राप्त होती है, हम अत्यन्त असहज होकर अस्तव्यस्त हो जाते हैं।

अनुकूलता में हमारे स्वभाव का पता नहीं चलता। हमारे स्वभाव का पता तो प्रतिकूलता में ही चलता है।

परमात्मा के जीवन में कहीं असहजता नहीं है। परिस्थितियों से जैसे कोई लेना देना ही नहीं है। एक ओर परमात्मा को वंदना करने वाले श्रद्धालु मिले तो उन्हें लगातार दु:ख और कष्ट देने वाले संगम देव जैसे लोग भी मिले।

पर परमात्मा दोनों ही स्थितियों में अपने आनंद में थे।

हम तो निमित्तों को दोष देना शुरू कर देते हैं। निमित्त तो लगातार मिलते ही रहेंगे।

क्रोध के निमित्त पाकर भी हम अपना धीरज... अपना विवेक त्याग न करें, यही तो हमारी संस्कारिता है। हमारे स्वभाव और संस्कारों का पता तभी चलता है।

व्यक्ति को अपनी भूल समझ में आ जाय... और तब अपनी भूल को छिपा कर अविवेक प्रकट करने के स्थान पर अपनी भूल को स्वीकार करना, यही संस्कार है... यही विवेक है... यही जीवन की शांति का अध्याय है।

अधिकतर लोग भूल समझ में आने पर भी तर्क करना शुरू कर देते हैं... अपनी भूल को स्वीकार करने के स्थान पर दूसरों की भूलें निकालना प्रारंभ कर देते हैं।

अपनी भूल स्वीकार करना, ऊँचाई की ओर लम्बी छलांग है।

भूल समझ में आने पर भी उसे सही साबित करने का तार्किक प्रयत्न करना, अपने भविष्य को अंधकारमय बनाने का पुरूषार्थ है।

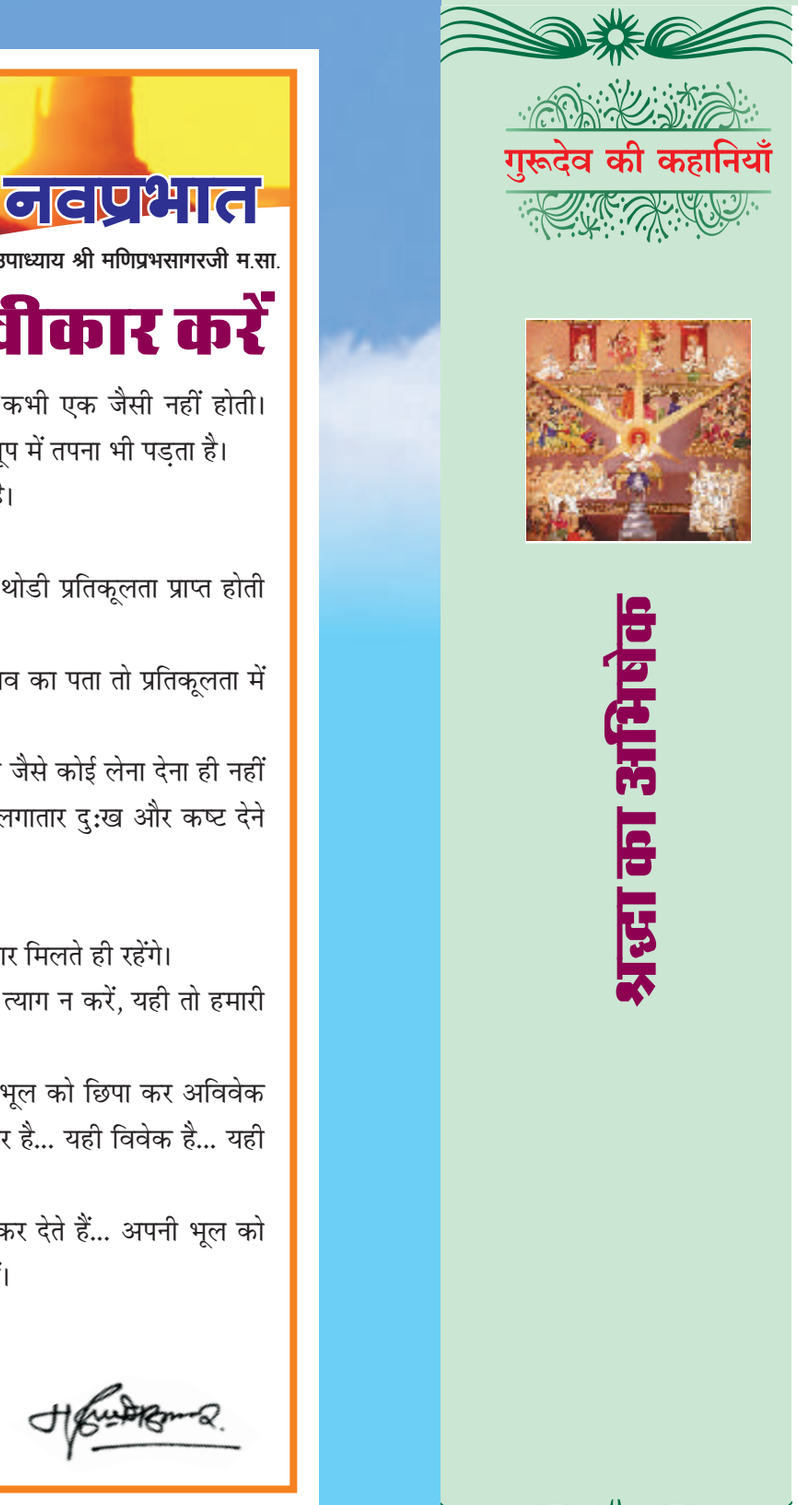

गुरूदेव की कहानियाँ

श्रद्धा का अभिषेक

गतांक से...

सेठ का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली, रौबीला और बेदाग था कि उसके समक्ष उन लोगों से कुछ कहते नहीं बना। उन्होंने इतना ही पूछा- इस बेवक्त हमें कैसे याद किया गया है?

सेठ ने कहा- सभी पारिवारिकजन, मित्रगण, हमेशा कहते थे कि किसी को गोद लिया जाय। इसी उद्देश्य से आपको कष्ट दिया है।

पंचों ने एक स्वर से कहा- ले लीजिए गोद, अपने परिवार में से किसी को भी पसन्द कर लीजिए।

सेठ ने कहा- मैंने पसन्द तो कर लिया है पर परिवार का नहीं। मैं इस व्यक्ति को गोद ले रहा हूँ।

पंच ऊपर से नीचे तक काँप गये। क्या यह सेठ पागल तो नहीं हो गया है?इस नामी चोर को गद्दी सौंप रहा है?

उन्होंने बात को शांत करने के प्रयास से कहा- सेठजी, पहले आप निश्चिन्त होकर सोच लें। जल्दी क्या है?

सेठ ने कहा- जल्दी तो कुछ नहीं हैं परन्तु मैं चाहता हूँ कि यह कार्य जल्दी हो जाय। अत: मैं आज ही निपटाना चाहता हूँ। वैसे मैंने इस व्यक्ति को अच्छी तरह परख लिया है।

पंचों ने कहा- आपकी परख पर हमें विश्वास हैं अत: जो आप करेंगे उचित ही करेंगे।

पंच खिसक गये। सेठ के चेहरे पर स्मित पसर गया। बाद में उन्होंने ज्योतिषी को बुलाया। चोर को समीप बैठा देखकर उसका भी माथा ठनका। अनमने मन से उसने भी मुहूर्त निकाल दिया।

गोद लेने की रस्म पूरी हो गई। व्यापार के सारे गुर धीरे-धीरे वह युवक सीखता चला गया। आलोचकों को मुँह की खानी पड़ी। हितचिन्तक आनन्दित थे।

बात कभी छुप नहीं सकती। उड़ती-उड़ती राजा के कानों तक पहुँच गई। राजा को कहा गया कि जिसको सेठ ने गोद लिया है, वह इस नगरी का नामी चोर था पर आज नामी ईमानदार है।

राजा के कान खड़े हो गये। उसने प्रधान के द्वारा उस चोर को बुलाया और पूछा- नगर में जो चोरियाँ हुई हैं वह किसने की हैं?

चोर ने ईमानदारी से जो-जो चोरियाँ की थीं उनका ब्यौरा सुना दिया। राजा ने पूछा- अन्य किसने की हैं?उसने कहा- अन्य के बारे में मैं नहीं जानता।

राजा ने कहा- तूं चोरियाँ क्यों करता था। तेरी योग्यता के कायल हमारी नगरी के परममान्य सेठ जैसे व्यक्ति हो सकते हैं तो इसका अर्थ यही है कि तुझ में कुछ असाधारणता अवश्य है।

युवक ने नम्र पर दृढ़ शब्दों में कहा- अपराध माफ हो पर हमें चोरियाँ करना आपने ही सिखाया है।

राजा चमक गया। उसने कहा- 'जरा स्पष्ट करना' मैंने कैसे चोरियाँ करवायीं।

युवक ने कहा- राजन्! आप प्रजा के रक्षक माने जाते हैं। बेरोजगार युवकों को नौकरी, उन्हें आजीविका के साधन उपलब्ध

करवाना आपका काम है। मैंने जब कोई आजीविका का साधन नहीं देखा तो भूखी आंतों को कुछ शांत करने के लिये ही जान की बाजी लगाकर यह धन्धा किया था।

राजा का सिर इस सच्चाई को सुनकर झुक गया।

उसने धीरे से कहा- अब मैं नगररक्षक का पद तुम्हें देता हूँ। भविष्य में यह तुम्हारा उत्तरदायित्व है कि राज्य में कोई भी चोरी न होने पावे।

युवक ने सिर झुका लिया। अपने खास स्थान पर जाकर उसने सभी चोरों को बुलाया और कहा- मैं तुम्हें पर्याप्त धन देता हूँ। आज से तुम चोरी जैसा अधम धन्धा छोड़कर कोई बढ़िया-सा धन्धा कर लो और शान से जीवन गुजारो।

चोरों ने कसम खा ली। सभी सन्तुष्ट और प्रसन्न थे। प्रजा ने भी अमनचैन की साँस ली। सेठ के इस दूरदर्शितापूर्ण कदम की सराहना होने लगी। सेठ को बुढ़ापे का सहारा मिल गया था और सेठ के वात्सल्य की बदौलत युवक का जीवन सँवर गया।

युवक धीरे-धीरे धार्मिक पथ पर भी बढ़ा और एक आदर्श सद्गृहस्थ की भूमिका पर पहुँच गया। सेठ ने पत्नी सहित गुरु की शरण स्वीकार कर ली।

गुरुजी आये रे

(तर्ज-देश रंगीला)

-मुमुक्षु नीलिमा भंसाली

गुरुजी आये आये आये आये रे
धरती अंबर भी सब मिलकर गाये रे।
धीरे-धीरे कदम रखते रखते
आज गुलाब नगर में आ पहुंचे
ज्ञान अनुठा, दर्शन सुनहरा, संयम अनोखा
धर्म रंगीला रंगीला, धर्म मेरा रंगीला।।

जिनशासन की शान बढ़ाये, जन जन को ये तारे,
करूणा करनार करूणा करते करूणा को ये धारे,
कोमल सुन्दर मीठा मधुर है ये रसीला
धर्म रंगीला रंगीला, धर्म मेरा रंगीला।।1।।

जीवन अर्पण करते है हम, चरणो में आज तुम्हारे,
आज का ये दिन कितना सुहाना, आया दरपे हमारे।
मीत हमारा, प्रीत हमारा, नवनीत ये हमारा
धर्म रंगीला रंगीला, धर्म मेरा रंगीला।।2।।

हर्ष खुशी के चेहरे यहा, जैसे मस्तानों की टोली,
रंग हंसी में रंग खुशी में भर दो सबकी झोली।
ज्ञान में रंग, त्याग में रंग, रंग रंग रंगीला
धर्म रंगीला रंगीला, धर्म मेरा रंगीला।।3।।

पर्व यह चातुर्मास का आया त्याग दया क्रिया का,
सामायिक पौषध पूजा करना, जन्म प्रभु का मनाना।
कर्म खपाना मोक्ष को पाना, लाक्ष्य यह हमारा
धर्म रंगीला रंगीला, धर्म मेरा रंगीला।।4।।

प्रीत की रीत

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री सुपार्श्वजिन स्तवन

साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

इससे स्पष्ट होता है कि दुनिया उतनी ही नहीं है, जितनी हम जानते हैं। जिस प्रकार की विस्तृत दुनिया बाहर की है उससे भी अधिक व्यापक दुनिया हमारे अंदर है। जब आदमी अंदर जाने लगता है तब उसकी आंतरिक दुनिया प्रकट होती है। ऐसा अद्भुत जगत हमारे भीतर है जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमारे स्थूल जगत में जितना सुख और आनंद है उससे कई गुणा आनंद हमारे भीतर मौजुद है। जब सूक्ष्म जगत जागृत बनता है तब समझ में आता है कि आनंद की वास्तविक परिभाषा क्या है?केवलज्ञान का प्रकाश जब अंदर फैलना प्रारम्भ होता है तब चित्त शांत और समाहित हो जाता है। जीवन के समस्त उलझाव समाप्त हो जाते हैं। और परम आनंद, परम चैतन्य और परम शक्ति प्रकट हो जाती है। सिद्ध का पर्यायवाची शब्द ही चिदानंद आत्मा है।

अक्षयदान अचिंतना,
लाभ अयत्ने भोग हो जिनजी।
वीर्य शक्ति अप्रयासता, शुद्ध
स्वगुण उपभोग हो।। ४।।

आप स्वगुणों का प्रतिपल दान करते रहते हैं। अचिंत्य लाभ को देने वाले हैं। बिना प्रयास ही स्वपर्याय को भोगते रहते हैं। समस्त प्रवृत्तियों में सहायक वीर्य गुण की स्फुरणा सहजतया होती है। शुद्ध गुण का उपभोग भी सतत चालु है।

इस पद्य में श्रीमद्जी ने परमात्मा के अन्तराय कर्म के विनाश से पाँचों लब्धियों का किस प्रकार उदय होता है, इसका विवेचन किया है। परमात्मा जितनी भी लब्धियों का उपभोग करते हैं वे सब सायास हैं। इन्हें पाने के लिये परमात्मा को कोई यत्न या पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता है। अपने गुणों का परमात्मा प्रतिपल दान करते रहते हैं। परमात्मा के गुण हैं- वीतरागता, अनंतज्ञानादि। प्रश्न मन को चौंकाता है कि जब परमात्मा प्रतिपल अपने गुणों का दान करते हैं तो हमारे में उनका प्रवेश क्यों नहीं होता। इसका समाधान यह है कि जगत के समस्त जीवों को परमात्मा प्रतिपल सहजता से अपने गुणों का दान करते हैं। परन्तु लेने या ग्रहण करने की योग्यता तो उसकी भी होनी चाहिये।

सूर्य का प्रकाश सतत सूर्योदय से सूर्यास्त तक धरती पर उतरता रहता है। परन्तु अगर कोई सूर्य की उपस्थिति में आँखों की पलकों को मूंद ले तो वह उसका लाभ नहीं ले सकता। प्रभु को ऐसा लाभ प्राप्त हो गया है कि उसे पाने के बाद किसी अन्य लाभ की आकांक्षा ही समाप्त हो गयी है। वे कृतकृत्य हो चुके हैं। स्व पर्याय को भोगने का प्रयत्न नहीं करना पडता है। परद्रव्यों में रमणता करना अथवा उन्हें भोगना प्रयत्न बिना नहीं होता। परन्तु स्वद्रव्य में रमणता के लिये पुरुषार्थ करना ही नहीं पड़ता। वीर्य गुण सभी गुणों में सहायता करता है। परमात्मा उपभोगान्तराय कर्म के विनाश हो जाने के कारण अपने गुणों के अखण्ड भोक्ता है। अन्तराय कर्म के क्षय से दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य ये अखण्ड लब्धियाँ परमारत्मा को प्राप्त थी। इन पाँचों लब्धियों का समावेश वीर्य लब्धि में ही हो सकता है।

परन्तु विशेष रूप से समझाने के लिये अलग-अलग बताई है। संपूर्ण वीर्य लब्धि की प्राप्ति से इन पाँचों लब्धियों का उपयोग पुद्गल द्रव्य रूप से करे तो वैसा सामर्थ्य भी उसमें है। फिर भी कृतकाम और वीतराग होने से स्वाभाविक रूप से ही उनमें इस प्रकार की पौद्गलिक प्रवृत्ति संभव नहीं है। उपदेश आदि देने की प्रवृत्ति भी योगाश्रित पूर्वबंध के उदय होने से ही है। आत्म स्वभाव में जरा भी विकृति का प्रवेश नहीं होता।

एकांतिक आत्यंतिको,
सहज अकृत स्वाधीन हो जिनजी।
निरूपचरित निर्द्वंद्वसुख,
अन्य अहेतुक पीन हो जिनजी।।५।।

हे प्रभु! आप एकांतिक, आत्यंतिक, सहज, अन्य द्वारा अकृत, स्वाधीन, निरूपचरित, निर्द्वन्द्वसुख के अखण्ड भोक्ता है। जिस सुख में अन्य द्रव्य कारण नहीं है, ऐसे अविवेच्य आनंद का पान प्रभु करते हैं।

इस पद्य में श्रीमद्जी ने आत्मा द्वारा प्राप्त आनन्द की अद्भुत व्याख्या की है। बाहरी पदार्थों द्वारा जितना भी सुख आता है, वह सारा सापेक्ष है। दु:ख के दो कारण है- आदत और अशाता वेदनीय का उदय! अपार संपति, आज्ञाकारी परिवार, शीलवती पत्नी, समाज में आदर, मान-सम्मान। फिर भी उसके चेहरे पर उदासी, खिन्नता, व्यथा! यह अशांति उसकी अपनी आदत का परिणाम है। दु:ख भोगने की आदत है और कुछ नहीं मिला तो अतीत का स्मरण करके भी दु:खी होगा। दूसरा है- अशाता वेदनीय! अतीत में कुछ ऐसे कर्मों के पुद्गल अशाता के खांचे में जाकर चिपक गये। जब वे समय की परिपक्वता पर उदय में आते हैं तब अप्रिय संवेदन जागता है और इंसान दुखी हो जाता है। दुख की दो अवस्था है जबकि सुख की तीन! सामग्री और संवेदन तो सुख औद दुख, दोनों परिस्थितियों में रहते हैं परन्तु सुख की एक तीसरी स्थिति भी है। वह है सुख चेतना की आंतरिक अनुभूति। आत्म जगत में दुख नहीं है। दुख बाह्य जगत की संवेदना है। आत्मा का स्वरूप तो अखण्ड आनंदमय है, हम इसे समझे।

जैसे दुख होना भिन्न है और उस दुख के कारण दुखी होना नितांत भिन्न है। अध्यात्म साधकों ने अपने आचरण द्वारा इसकी भिन्नता को अपने साधनाकाल में बार-बार उजागर किया। भगवान महावीर ने संगम देव ने कम कष्ट दिये?चंदनबाला महासती को मूला सेठानी ने कम परेशान किया?नवपद की परम श्रेष्ठ साधिका मयणासुंदरी की महाराज प्रजापाल ने कम कसौटी की?मेतारज, गजसुकुमाल, स्कंदक मुनि आदि अनेक प्रभावशाली संतों को क्या कम दुख दिये गये?पर क्या वे दुखी हुए?संवेदना की चेतना से ऊपर उठ जाने के कारण वे दुख को भी सहजता से ग्रहण कर लेते।

अतीन्द्रिय चेतना का विकास हो जाने के बाद न तो आदत की पराधीनता रहती है और न अशाता कर्म, दुख का कारण बनता है। परमात्मा की चेतना चूंकि विकास की चरम बिन्दु बन चुकी थी तब उसमें इन्द्रिय स्तर की सुख दुख की संवेदना समाप्त होनी ही थी। जिसमें किसी भी प्रकार का उपचार आरोपण का भाव न हो, वह निरूपचित कहा जाता है।

श्रीमद्जी इस पद्य द्वारा एक संकेत भी जिज्ञासुओं को करते हैं कि उसका समर्पण ऐसे व्यक्ति के प्रति ही होना चाहिये जो स्वयं एकांतिक सुख को उपलब्ध हो। जो ऐसे परमात्म पद को प्राप्त चेतना को समर्पित नहीं होता, वह अपने जीवन में ऐसे सुख को पाने का पुरुषार्थ नहीं कर सकता। और न सफल हो सकता है। जो परमात्मा को सर्वात्मना समर्पण कर देता है वह अवश्य ही इस भूमिका तक पहुँच सकता है। आनंद, ज्ञान, शक्ति और चारित्र जिसमें निरन्तर प्रवाहित है उसी को हम अपना आदर्श बनावें। उसी के साथ अपना तादात्म्य जोडें। इस तादात्म्य की स्थिति में हमारे भीतर नई चेतना, अलौकिक चेतना का उदय होता है तब अशाता कर्म का उदय तो हो सकता है। पर चूंकि उसका समर्पण या तादात्म्य आनंदमय चेतना से है अत: उस परम प्रभु की शक्ति का हमारी चेतना में भी प्रवेश हो जाता है। तब किसी भी परिस्थिति में विकलता, बैचेनी, भय के उद्वेग, चेतना को परेशान नहीं करेंगे।

श्री नाकोड़ा भैरवदेव के परम भक्त, जिनशासन के अनमोल रत्न,
लोकप्रिय वरीष्ठ समाजसेवी, जीवदयाप्रेमी

श्री अमृतलालजी कटारिया सिंघवी

समाज गौरव से सम्मानित

जैन परिवार 'पाक्षिक' के 14वें स्थापना दिवस पर गुजरात ग्राम कल्याण बोर्ड के चेयरमेन श्री सुनिल सिंघी व बाड़मेर विधायक श्री मेवाराम जैन द्वारा सेवा में समर्पित श्री अमृतलाल सिंघवी-मुंबई को समाज गौरव से अलंकृत करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएं।

- संरक्षक– श्री नाकोड़ा तीर्थ पूर्णिमा पदयात्रा संघ, भैरव सेवा समिति, बालोतरा
- संस्थापक अध्यक्ष– कटारिया एवं कटारिया संघवी फाउण्डेशन, मुंबई
- उपाध्यक्ष– श्री बालोतरा प्रगति मंडल, मुंबई
- महामंत्री– श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ, मुंबई

शुभेच्छु

घेवरमल उत्तमचंद श्रीश्रीमाल, बालोतरा–मुंबई
दलीचंदजी खिमराज बालर, बालोतरा–सुरत
शांतीलाल अशोककुमार आनंदकुमार डागा, बालोतरा
कांतीलाल कुणाल नाहटा, बालोतरा–पाली–मुंबई

श्रमण चिंतन

22

प्रथम चूलिका का विवेचन

असाधुता का संक्लेश

दशवैकालिक सूत्र की

साधुता का आनंद...

मुनि श्री मनितप्रभसागर जी म.सा.

गतांक से आगे...

- ✤ दीक्षा अर्थात् जीवन जीने की कला।
- ✤ प्रव्रज्या अर्थात् पावन संस्कारों की पवित्र गंगोत्री।
- ✤ संयम अर्थात् अभावों में भी पीड़ा का विश्राम स्थल।
- ✤ महाभिनिष्क्रमण अर्थात् परमात्मा बनने की प्रक्रिया।

साधु! तूं क्या समझ नहीं रहा कि यह दीक्षा अति मूल्यवान् है।

- 卐 दीक्षा कल्पतरू से अनन्त गुणा कल्याणकारी है क्योंकि कल्पतरू तो मांगने पर ही इच्छित फल देता है पर संयम का कल्पवृक्ष बिना मांगे ही सब कुछ दे देता है।

और कल्पतरू तो संसार की इच्छाओं को पूर्ण करता है परन्तु दीक्षा का कल्पवृक्ष तो समस्त इच्छाओं को समापन करके परम-चरम सुख-रस का आस्वादन करवाता है।

- 卐 दीक्षा चिन्तामणि रत्न से भी महामूल्यवान् है। चिन्तामणि चिन्तित फल देता है पर प्रवज्या चिन्ता के कंटकवन से बाहर निकालकर चिन्तन के उपवन की सैर करवाता है।
- 卐 पारसमणि से भी कीमती यह दीक्षा! पारसमणि क्या करता है? लोहे को सोना बनाता है पर पारसमणि नहीं जबकि संयम तो भक्त को भगवान बनाता है।
- 卐 संयम कामधेनु और कामघट से अधिक प्रभावशाली, सुखद, मधुर और मंगलकारी। सारे अमंगलों का सर्वमंगल।

जब तूं गृहस्थ बनने की कामना अपने हृदय में संजो कर बैठा है, तब मेरा मन कितना दु:खी हो रहा है। और दु:खी भी इसलिये कि संसार का जीवन सरल-सरस-समतल नहीं है।

- ✤ वहाँ लोगों के मन में वक्रता है।
- ✤ वहाँ के सुख निरस और फीके हैं।
- ✤ वहाँ का मार्ग विषम और कंटीला है।

यही बात चूलिका में कहीं जा रही है। चाहे तो पढ़ ले यह 11वां सूत्र- **'सोवक्केसे गिहवासे निरुवक्केसे परियाए।'**

अरे ए साधु! गृहस्थ और गृहत्यागी के जीवन में उतना ही अन्तर है जितना जमीन और आकाश में... अंधकार और प्रकाश में।

गृहस्थ जीवन संक्लेशों से भरा है जबकि साधु जीवन क्लेशमुक्त है।

- ✤ गृहवासी दिन-रैन चिन्ताओं के जाल में मकड़ी की भांति फंसते जाते हैं जबकि संन्यासी ध्यान के उन्मुक्त आकाश में उड़ान भरते हैं।

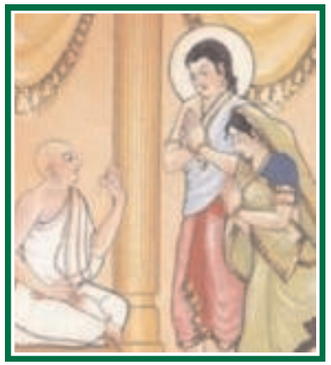

- ✤ संसार में क्रोध की ज्वाला है और संयम में समत्व का उजाला है।
- ✤ संसार दु:खों का काला नाग है और संयम सुख का सुन्दर बाग है।

With best compliments from ASHOK M. BHANSALI

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

तूं देख शास्त्रकार क्या कह रहे हैं-

भवाब्धितारिणी दीक्षा, दीक्षा मुक्ति सुखप्रदा।
धन्यैराद्दीयते दीक्षा, प्रोक्तं जिनैर्जिनागमे॥

दीक्षा भवसागर से तारने वाली है।

दीक्षा मुक्ति-सुख देने वाली है।

वे लोग धन्य है जो संयम का शुभ्र वेश धारण करते हैं। ऐसा जिनेश्वरों के द्वारा कहा गया है।

मैं तुझे बताता हूँ कि संसार किस प्रकार क्लेशपूर्ण है और संयम किस प्रकार क्लेश मुक्त है।

(१.) संसार के सम्बन्धों में स्वार्थ का जहर घुला हुआ है पर संयमी सदैव परमार्थ के अमृत-सागर में अवगाहन करते हैं।

एक घर में बुढ़े दादाजी की मृत्यु हुई। पुत्र-पौत्रों ने मृत्यु की घोषणा नहीं की।

क्यों ?

क्योंकि घर पर हाफुस आम से भरे चार बॉक्स पड़े थे।

उन सभी ने निर्णय किया कि पहले महंगे आम खा लेते हैं, बाद में लोगों को बतायेंगे। यदि पहले उन्हें पता चल गया तो सारे आम फैंकने पड़ेंगे। यह संसार असली स्वरूप है कि व्यक्ति जिन संतानों के लिये खून-पसीना एक करके पैसा जोड़ता है, वे ही संतानें उसे भयंकर ढंग से जलील करती है। संयम का जीवन इससे बिल्कुल अलग है।

संयम जीवन सर्वथा क्लेशमुक्त है क्योंकि साधु की रग-रग में वैराग का खून दौड़ता है। कहीं कभी कोई मनमुटाव या अलगाव की स्थिति पैदा होने लगे तब वह संसार की अनित्यता, सम्बन्धों की क्षणिकता और जीवन की नश्वरता को ज्ञात कर परमानन्द में रमण करता है। भावों में कालुष्य पनपने नहीं देता।

(२.) संसार में पग-पग पर अभाव, दुःख, पीड़ा और बीमारियों का महाजाल बिछा हुआ है।

✤ एक पल में राजा, रंक बन जाता है।

✤ एक पल में सुझता, अंधा बन जाता है।

✤ एक पल में स्वस्थ, बीमार हो जाता है।

✤ एक पल में जिन्दा, शव बन जाता है।

卐 संयमी की साधना का प्रभाव ही अचिन्त्य है कि वह अभावों में भी सद्भाव, समत्वभाव और संतभाव धारण करके धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान की गहराईयों में उतर जाता है। आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान के विकार से अपने विचारों को बीमार नहीं करता।

卐 संत दुःख को कर्मनिर्जरा का प्रबल कारण जानकर परम समाधि में रहता है।

卐 शरीर पर भले ही हजारों बीमारियों के आक्रमण हो तथापि वह अममत्व भाव का पोषण करता हुआ साधुत्व में स्थिर रहता है।

(३.) संयमी की यह खास विशेषता है कि वह ईगो प्रोब्लम तैयार नहीं करता। नाम की बजाय सत्कर्म में रमण करता हुआ वह यशोमान से कोसों दूर रहता है। जब अत्यन्त पुण्यशाली तीर्थंकर भगवंतों का भी नाम नहीं रहता तो मुझ अल्प पुण्यवान् का नाम कहाँ रहेगा?यह सुन्दर सोच उसे सदा होश में रखती है, परिणाम स्वरूप यशोमान की गुत्थियों में साधु कभी नहीं उलझता।

दूसरी ओर संसार में केवल एक ईगो के पागलपन के कारण दो सगे भाई एक-दूसरे के खून के प्यासे बन जाते हैं।

और कितनी बातें कहूँ?हे मुनि! तूं स्वयं समझदार है।

1. संसार में पत्नी झगड़ालू मिले तो क्लेश ही क्लेश है जबकि संयम में सद्गुरु की शीतल छांव में आनंद ही आनंद है।
2. संसार में व्यापार न चले तो चिन्ता सताती है पर संयमी तो अकिंचन होने सदा आत्मानंद में डूबकी लगाता है।
3. संसार में बहुत बड़ी लड़ाई इस बात की भी है कि उसे ज्यादा मिला और मुझे कम। पर संयमी को ऐसी चिन्ता कही नहीं सताती क्योंकि संत-चेतना में निर्लोभला, निर्लिप्तता और निर्विकारता की सरिता बहती है। स्वार्थ और लोभ की दुर्भावनाएँ उसकी आत्मा में कभी आहट भी नहीं पा सकती है। जब उसे शरीर पर भी ममत्व नहीं तो साधनों और सुविधाओं पर ममत्व क्या होगा?
4. संसार में कब अपने पराये बन जाते हैं, अभावों के कगार

पर अकेला छोड़कर चले जाते हैं जबकि संयमी देवाधिदेव और सद्गुरुदेव की छांव में सदैव परिपूर्णता का एहसास करता है।

साधु! तुझे मैं यह विशेष हिदायत देता हूँ कि नादान मत बन। यहाँ के सामान्य कष्टों से घबराकर दुर्गति के गर्त में गिरने की गलती मत कर।

बाद में तुझे केवल यह पश्चाताप रहेगा कि नदी के मीठे जल को छोड़कर मैंने समुद्र के खारे जल में डूबकी क्यों लगायी?

'दूर थी डूंगर रलियामणा' दूर से पर्वत बहुत सुन्दर प्रतीत होते हैं पर आरोहण करने जाओ तो सुख नहीं मिलता, वैसे ही संसार के सुख दूर से कोमल प्रतीत होते हैं, स्पर्श करने जाओ तो हाथों को लहुलुहान कर देते हैं।

卐 यहाँ के कष्ट सिमट जायेंगे।

卐 यहाँ कर्मों की निर्जरा होगी।

卐 यहाँ समाधि का भाता मिलेगा।

यह सोचकर संक्लेश, असमाधि और तनावपूर्ण संसार में मत जाओ। संयम रूप समाधि का परित्याग मत करो क्योंकि चिड़ियां के खेत चुग जाने के दुःख और पछतावे के सिवाय भला क्या हाथ लगता है?

चातुर्मास-तीन सवाल

3

योग : विनियोग

तीन सवालों की चर्चा चल रही है।

प्रथम दो सवालों पर विचार चला। इस अंक में हमें तीसरे सवाल पर मन को एकाग्र बनाना है।

तीसरा प्रश्न है- **चातुर्मास की साधना कैसे करें?**

कितने ही चातुर्मास आये और गये! पर मन की गलियाँ न धुली... चरित्र पवित्र न बना और आचार को नहीं मांजा गया तो चातुर्मास की विशेष सार्थकता न रहीं। पापों के पंक में डूबा संसारी चातुर्मास के पर्व में महापापों के दल दल से बाहर आने का पुरुषार्थ सजाता है।

इसमें संवत्सरी पर्व तक के 50 दिन विशेष जप-तप और साधना में व्यतीत होते हैं।

योग या विनियोग?

चातुर्मास और साधु-संतों के सत्संग का अवसर पाना एक संयोग है पर जीवन का परिवर्तन विनियोग है।

योग में पुण्य की प्रधानता होती है जबकि विनियोग में पुरुषार्थ की प्रधानता होती है। दुरुपयोग तो महामोह का परिणाम है।

✤ एक लाख खर्च करके उससे अधिक राशि पाना **विनियोग** है।

✤ एक लाख खर्च करके उतना ही धन पाना **योग** है।

✤ एक लाख खर्च करके उससे कम पाना धन का **दुरुपयोग** है।

- चातुर्मास में जिनवाणी के द्वारा जीवन की मूल्यवत्ता समझकर आजीवन का अथवा कुछ वर्षों का जो परिवर्तन घटित होता है तो वह चातुर्मास विनियोग है।
- चातुर्मास के अथ से अन्त पर्यन्त मन-वचन-काया का संशोधन हो पर चातुर्मास की पूर्णता के साथ पूर्ववत् मोह, राग, द्वेष और लोभ का जीवन जीते रहे, यह चातुर्मास का योग है।
- चातुर्मास अर्थात् जागरण अवसर मिलने पर भी अपने आचार, विचार एवं व्यवहार के प्रति सजगता एवं अप्रमत्तता का बोध न हो तो वह चातुर्मास का दुरुपयोग है।

✤ चातुर्मासों में पूर्ववत् रात्रि भोजन करना दुरुपयोग है।

✤ मात्र चातुर्मास में रात्रि भोजन का त्याग करना योग है।

✤ चातुर्मास में ही नहीं, वर्षों तक रात्रि भोजन का त्याग करें, यह विनियोग है।

यहाँ धर्म व्यापार की सूची दी जा रही है। यथाशक्ति-यथारुचि उससे अपने आपको जोडकर बेस्ट सेलर का खिताब पाना है।

卐 अध्यात्म का विनियोग

- कषायों पर विजय प्राप्त करें।
- पुत्र, परिवार और पैसे पर ममता भाव को क्षीण करें।
- मान में राजी न हो, अपमान में उदास न हो।
- समाधि और साधना से अन्तर्मन को शुद्ध करें।
- यदि एक बार गुस्सा का जाय तो प्रायश्चित ले। यथा उस दिन चाय का त्याग।
- हरे वर्ण का कण्ठ पर ध्यान करे, गुस्सा कम होगा।
- लोभ के भूत से दूर रहे। संतोष के देव की सेवा करें।
- दूसरों की भलाई करें। न हो सके तो कम से कम बुराई न करें।
- किसी की निंदा और चुगली रूपी पापजनक प्रवृत्तियों को विदा करें।

卐 विज्ञान का विनियोग

- रात्रि भोजन का परित्याग करें, परिणामतः बाह्य और आन्तरिक, दोनों तौर पर स्वास्थ्य स्वस्थ रहेगा।
- बाहर के पिज्जा, बर्गर, पास्ता, नुडल्स आदि अभक्ष्य पदार्थों को मुँह से भी न लगाये। इससे चर्बी, मोटापा, डायबीटिज आदि परेशानियाँ विदा हो जायेगी।
- गुटखा, अफीम, भांग, चरस, बीडी-सिगरेट के तो दर्शन से ही विकारोत्पत्ति का जहरीले कीटाणु हमारी चेतना से चिपक जाते हैं, अतः इनसे सौ कदम दूर ही रहे।
- अनावश्यक वाहन-उपयोग से दूर रहे। पैदल चलने की आदत डाले। इससे जहाँ अहिंसा की साधना होगी, दूसरी ओर वायु प्रदूषण की समस्या का हल भी मिलेगा, तीसरा लाभ यह होगा कि तन-मन और विचारों से स्फूर्ति बनी रहेगी।

✤ याग-प्राणायाम और ध्यान की साधना को समय दें।

✤ योग से शारीरिक स्वस्थता मिलेगी।

✤ प्राणायाम से मानसिक स्वस्थता मिलेगी।

✤ ध्यान से आध्यात्मिक स्वस्थता मिलेगी।

卐 क्रिया का विनियोग

- परमात्मा, गुरुदेव आदि महापुरुषों को खडे-खडे खमासमणे दे।
- प्रतिक्रमण नियमित एवं विधिवत् करें।
- सामायिक के द्वारा चेतना को समत्वभाव से आप्लावित करें।
- प्रवचन श्रवण से जीवन की सही दिशा का निर्धारण करें।
- सुपात्रदान द्वारा धर्म के बंद द्वार खोले।
- प्रभु-दर्शन एवं पूजन के द्वारा परमात्मा बनने का पुरुषार्थ करें।
- ब्रह्मचर्य की महासाधना से वीर्य को उर्ध्वगामी बनाये तथा उन्नति के सोपान चढे।

卐 ज्ञान का विनियोग

- नये सूत्र, नयी गाथाएँ कंठस्थ करें।
- पुराने कच्चे पाठ, पक्के करें।
- तत्वचर्चा से जैन तत्त्व को समझे।
- सूत्रोच्चारण की स्पष्टता एवं विशुद्धता पर पूरा ध्यान दें।
- स्वाध्याय के द्वारा इस श्रेष्ठ तप का आदर करें।

卐 अहिंसा का विनियोग

- बड़ी, पापड़ आदि बनाने का कार्य न करें।
- गृह-दुकान बंधवाने, रंगादि का कार्य करवाने के पाप कार्यों का सेवन न करें।
- कम से कम पांच तिथियों में हरी वनस्पति का त्याग करें।
- जल के उपयोग में भी विवेक का प्रयोग करें। अल्पजल से स्नान, वस्त्र-प्रक्षालन आदि का विवेक धारण करें।
- मर्मभेदी सत्य भाषा का वर्जन करे। हित, मित, निरवद्य और मधुर शब्दों का प्रयोग करें।
- नीचे देखकर चले। प्राणी-हिंसा से बचे।
- महारंभ-सभारंभ वाले व्यापार का परित्याग करें।
- वस्त्र, आभूषण आदि की खरीदी से दूर रहे।
- परदेश गमनागमन का त्याग करें।

卐 तप का विनियोग

- कम से कम नवकारसी प्रतिदिन करे।
- पर्युषण पर्व में तेला करें। संभव न हो तो तीन अलग-अलग उपवास करें।
- आचरण में स्वच्छंदता-उच्छृंखला का त्याग करके सादगी और संयम का स्वागत करें।
- रात्रि भोजन का त्याग करें।
- प्रतिदिन एकासन अथवा बियासन तप से आत्मा को निर्मल बनाये।
- पर्व तिथियों में यथाशक्ति आयम्बिल या उपवास का तप करें।
- भोजन में राग-द्वेष छोडे। भगवान का प्रसाद मानकर निर्लिप्त भाव से ग्रहण करें।
- पेय सचित्त जल का वर्जन करें।
- तप के अभिमान से बचे। तपस्वी की वेयावच्च एवं प्रशंसा का अनूठा आनंद पाये।

उपरोक्त धर्म के व्यापार हैं। इसमें लाइफ मनी का इन्वेस्टमेन्ट कीजिये और ग्रोस प्रोफिट में देवलोक के सुख, संसार में जिनशासन की प्राप्ति, धर्म की अनुकूलता आदि पाईये तथा नेट प्रोफिट में शाश्वत मोक्ष रूपी लक्ष्मी पाईये।

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

संस्मरण

हमारे भाया : एक प्रकाश स्तंभ

पूर्णिमा की चांदनी रात को अंधेरा हो गया। ओह! वह पल कितना दर्दनाक था, जब मेरे कानों में यह समाचार पडा कि संघवी श्री पुखराजजी सा. नहीं रहे।

मन स्तंभित हो गया। नहीं, यह सच नहीं हो सकता। हमारे प्यारे भाया इस प्रकार हमें छोडकर नहीं जा सकते।

अभी चार दिन पहले तो हम साथ थे। प्रवेश 6 जुलाई का था। भाया 4 को ही आ गये थे। तीन दिन पूरे हमारे साथ थे। कितनी कल्पनाऐं थी... हमने बैठकर आगे की योजनाऐं बनाई थी...।

जीरावला दादावाडी की पूरी जिम्मेदारी उनके कंधों पर थी। चातुर्मास के पश्चात् दादावाडी के निर्माण का कार्य प्रारंभ करने का सपना था।

पिछले चार पांच वर्षों से वे योजना बना रहे थे कि अपने को सम्मेतशिखरजी छह री पालित संघ लेकर जाना है। आप चिंता न करो। संघपति भी मैं लाऊँगा और व्यवस्था भी मैं देखूंगा। आप तो बस समय निकालो! मैं प्रतिष्ठाओं व अन्य आयोजनों के कारण समय नहीं निकाल पा रहा था।

और अचानक इस प्रकार चले जाना..., रोम रोम पीडा से भर उठा। 28 वर्षों का उनका साथ छूट गया। इन वर्षों में वे लगातार एक तरह छाया की भांति हमारे साथ थे।

पूर्णिमा के दिन प्रवचन के पश्चात् सकल श्री संघ के समक्ष जब मैं श्रद्धांजली दे रहा था, तो मन बार बार यह कहता था कि ऐसा कैसे हो सकता है... मन मानने को तैयार ही न था।

पर काल के इस निर्मम सत्य को स्वीकार तो करना ही पडता है। कितने ही आँसू बहाओ... काल को कोई फर्क नहीं पडता।

उनके साथ बीते पलों की स्मृतियाँ दिल दिमाग में तैर रही है।

मेरे गुरुदेव के स्वर्गवास के पश्चात् मेरा पहला चातुर्मास सन् 1986 में पादरू में हुआ था। तब भाया का परिचय हुआ था। अत्यन्त प्रेमाल, अपने पिताजी की भांति खडी भाषा बोलने वाले, हृदय के पूर्ण स्वच्छ भाया, कब हमारे अत्यन्त आत्मीय हो गये, पता भी नहीं चला। जैसे जन्मों-जन्मों का प्रेम था।

ऐसा कोई समारोह नहीं हुआ, जिसमें भाया की साधिकार उपस्थिति न हो! पालीताना में वर्षीतप के पारणे का विशाल आयोजन हो चाहे कुशल वाटिका की प्रतिष्ठा! जहाज मंदिर का चातुर्मास सह उपधान हो चाहे मुंबई-पालीताना में चातुर्मास महोत्सव! हर आयोजन में उनका पूरा योगदान होता था।

अजमेर भीलवाडा जिले के धनोप, फतेहगढ, देवलिया कलां में लगातार हुई तीनों प्रतिष्ठाओं में संयोजक की जिम्मेदारी सम्हाल कर उन महोत्सवों को ऐतिहासिकता प्रदान की थी।

वे सही अर्थों में साधु साध्वियों के माता पिता थे। उनकी आँखों में साधु साध्वियों के प्रति वात्सल्य का सागर लहराता था। मैं श्रावकों से चर्चा के दौरान कहता था कि साधर्मिक भक्ति किसे कहते हैं, कैसे की जाती है, यह पुखराजजी सा. से सीखनी चाहिये। मुंबई चातुर्मास के दौरान जो भी बाहर से श्रावक आते, वे उन्हें अपने घर लेकर ही जाते। और एक सच्चे श्रावक की भांति बाजोट आदि की व्यवस्था के साथ रजत थाल में उन्हें प्रेम-रस से सराबोर ऐसा भोजन करवाते कि वह व्यक्ति अपने जीवन में कभी भी उनके घर में हुई साधर्मिक भक्ति को भूल ही नहीं सकता था।

वे भावनिष्ठ क्रियावान् श्रावक थे। परमात्मा की भक्ति करते समय उनके चेहरे पर छाया समर्पण का रंग दर्शकों को भी उसी रंग में रंगने को मजबूर कर देता था।

उनका जीवन एक प्रकाश स्तंभ की भांति था। वे स्वयं प्रकाशित थे। और अपने आचरण से सभी को रोशनी दिया करते थे। उनका जीवन प्रेरणा का दिव्य पुंज था। इस प्रार्थना के साथ उनकी दिनचर्या प्रारंभ होती थी कि मुझे संयम कब मिलेगा!

कराल काल ने हमारे परम प्रिय भाया को छीन कर ऐसी रिक्तता दी है जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो पायेगी। मैं अपने परम प्रिय श्रावक रत्न भाया को हृदय से श्रद्धांजली अर्पण करता हूँ... कामना करता हूँ कि वे सद्गति प्राप्त कर क्रमशः आराधना साधना द्वारा मुक्ति पद के भोक्ता बने।

-उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म.

संस्मरण

स्मृतियों के आईने में 'भाया'

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

क्या लिखूं? कहाँ से शुरू करूं? अंगुलियाँ जैसे कलम उठाने को ही तैयार नहीं है। मन-मस्तिष्क शून्य हो गया है। फिर भी लिखना तो है ही। पर समझ में नहीं आ रहा कि बात की शुरूआत कहाँ से करूं?

ओह! इसे आयुष्य का अमिट शिलालेख कहूं या कुछ और! 'भाया' पर लिखने के लिये एक-एक पल को दुबारा जीना होगा। जो अतीत का अखण्ड हिस्सा बन चुके हैं, उनका आज साक्षात्कार करना होगा।

उन लम्हों को लिखते-लिखते हृदय भीग गया है... जैसे वक्त ठहर सा गया है... हवा... खुश्बू... सभी सांस थामे खड़े हैं और एक-एक करके कितनी ही यादें मेरे नयन पटल पर उतरने लगी हैं।

काल की अपेक्षा से आषाढ़ मास का शुक्ल पक्ष चल रहा था पर भाग्य की अपेक्षा से अमावस से भी घोर अंधकार छाने लगा था।

मुझे याद आ रहा है कि हम पांच मुनि कुंभोज तीर्थ के उपाश्रय में थे और एक जानी-पहचानी....वात्सल्य से भीगी ध्वनि वातावरण को माधुर्य से भर गयी। यह आवाज किसकी है? यह सोचने का अवकाश कहाँ था। भाया ठीक हमारे सामने थे। घुटनों में भयंकर पीड़ा होने पर भी दादा जगवल्लभ पार्श्वनाथ की एक-एक सीढ़ी चढ़कर प्रभु कृपा का भाता लेकर लौटे थे।

6 जुलाई को इंचलकरंजी प्रवेश समारोह भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अगले ही दिन घड़ी रात्रि के दस बजा रही थी। अभी अभी संथारा बिछा ही था कि कानों से एक संवाद टकराया। संवाद क्या था, तेल से भी खौलते शब्द थे। श्री मुकेशजी को पुष्पाजी-मुम्बई से फोन पर समाचार मिले थे- भाया का... हमारे आदरणीय वात्सल्यचेता 'भाया' का एक्सीडेन्ट हो गया। सुनकर जैसे एक आघात लगा... हाथ-पाँव सुन्न हो गये। रह-रहकर भाया का चेहरा आँखों के सामने आने लगा-

- कृष्णावर्णीय काया और चेहरे पर छायी तप की तेजस्विता।
- रौबदार व्यक्तित्व पर नम्रता से झुकी आँखें...।
- श्वेत कुर्ता - पाजामा और निरभिमानता की शुभ्रता।
- कानों में हीरेजडित चमकते लूंग।
- होंठों पर 'मत्थेण वंदामि' की मीठी किलकारी।

मुम्बई में मेरा दीक्षा-अभिनंदन समारोह था, तभी मेरी उनसे पहली पहचान हुई पर 2003 मुम्बई चातुर्मास में वह पहचान आत्मीयता में बदल गयी।

उनका हर चातुर्मास में आना होता रहा पर उनके अगाध व्यक्तित्व की गहराई का परिचय तो सन् 2008 माण्डवला-जहाज मंदिर के चातुर्मास एवं उपधान आराधना के दौरान ही हुआ। मैंने उस अवधि में अच्छी तरह जाना और माना कि इस सामान्य शरीर में एक विराट् आत्मा का निवास है।

- वे स्वयं के प्रति जितने कठोर थे, दूसरों के प्रति उतने ही कोमल-सरल थे।
- वे जितने उत्तम तपाराधक थे तो खाने-पीने के भी उतने ही शौकीन थे।
- वे सौम्य थे तो तेजस्वी भी कोई कम न थे।

वास्तव में भाया तो भाया ही थे। भाया जैसा शब्दातीत व्यक्तित्व मैंने न भूतकाल में देखा, न वर्तमान में उनका कोई सानी नहीं है। निकट भविष्य में उनकी महान् क्षति की संपूर्ति कोई कर पाये, ऐसी संभावना भी नजर नहीं आती।

'भाया' दृष्टिपथ में बाद में आते, चंदन-सी शीतल-सुगन्धित आवाज पहले ही कानों से उतरकर रोम-रोम में समाहित हो जाती क्योंकि उस पुकार में अगाध प्यार होता था। उस सम्बोधन में एक संगीत होता था। उस ध्वनि में जैसे प्रीत का प्रवाह होता था। वे आते तो ऐसा लगता, जैसे घर का ही कोई परिजन हमारे बीच आ गया है। इतनी सहजता से वे हमारे हृदय को छू जाते कि बनावटी व्यवहार उनका स्पर्श भी नहीं कर पाता।

ऐसा नहीं था कि वे मणि-मण्डल के ही प्रिय-आत्मीय व्यक्तित्व थे अपितु खरतरगच्छ के परिचित समस्त साधु-साध्वियों के चहेते और पसंदीदा व्यक्तित्व थे। इसी कारण सारे साधु-साध्वी 'भाया-भाया' कहकर अपने भीतर का अपनत्व उन पर उंडेला करते थे।

भाया के हृदय में संतों का निवास था, यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी पर संतों के हृदय में 'भाया' का स्थान था, यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी। इस दुनिया में विरले लोग होंगे जो गुरु के हृदय में अपना स्थान बनाया करते हैं और 'भाया' उन विरलें लोगों में से एक थे।

वे जहाँ कहीं पहुँचते, बड़े-बड़े पदधारी या यशस्वी गुरु भगवंत ही नहीं, छोटे-छोटे साधु-संत भी चहक उठते क्योंकि पद या पैसे का अहं उन्हें छू भी नहीं सका था। यद्यपि भाया उम्र के तौर पर सातवें दशक की पूर्णता के निकट थे पर उनमें शिशु-सी

मोहकता, बालक-सी सरलता, किशोर-सी चपलता, युवक-सी संकल्पबद्धता और प्रौढ़-सी गंभीरता टपकती थी। कितना अद्भुत था उनका व्यक्तित्व। वे बड़ों के साथ जितने धीर, तेजस्वी और गंभीर नजर आते थे, बाल मुनियों के साथ उतने ही मासूम, तरल और मजाकिया मूड वाले थे।

स्मृतियों के गवाक्ष से भाया के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर नजर डालता हूँ तो हजारों गुण एक साथ विचार वीथी पर उतर आते हैं।

(1) **तपोनिष्ठ व्यक्तित्व**- 'भव कोडिय संचियं कम्म, तवसा णिज्जरिज्जइ' यह आगमिक वाक्य लिखते ऐसा लगता है... जैसे भवोभव के निबिड कर्मों का क्षय करना उनके तपोमय जीवन का पहला लक्ष्य था।

यद्यपि भाया की प्रारम्भिक जीवन चर्या में तप नहीं था पर पिछले लगभग दो दशक से तप की प्रधानता उनके आचार से टपकती रही।

सन् 1983-84 में उन पर हार्ट अटैक ने आक्रमण किया और जैसे भाया की चेतना ही रूपान्तरित हो गयी।

शरीर की हजारों प्रतिकूलताएँ हो या कार्यक्रमों की सैंकड़ों व्यस्तताएँ हो, भाया के तप की लौ कभी हीन, क्षीण या मंद नहीं हुई। आठ वर्ष के सुदीर्घ एकान्तर तप की अवधि में शासन प्रभावना के लक्ष्य से उन्होंने हजारों-लाखों किलोमीटर की यात्राएँ की, उनमें सुविधा-दुविधा, अनुकूलता-प्रतिकूलता को गौण करके सदैव तपाराधना में तल्लीन रहे। उनकी तप सूची इस प्रकार है-

- सात वर्षीतप और आठवां गतिमान्।

- सात अट्ठाइयाँ जिनमें चौसठ प्रहरी पौषध एवं एक अट्ठाई में सम्पूर्ण मौन-साधना।
- वीसस्थानक एवं वर्धमान ओली।
- तीन बार केशलुंचन।

यहाँ तक कि सडक दुर्घटना होने के बाद भी उन्होंने व्याधि को समाधिमय बनाते हुए स्पष्ट कह दिया था- देखो! मेरे आज उपवास है। मैं किसी भी तौर पर मुँह से औषधि नहीं लूंगा और सूर्यास्त होने से साथ गरम पानी की बोटल भी कक्ष से बाहर भिजवा दी। यह उनकी जीवन भर की तपस्या और साधना का ही सत्परिणाम था कि तप की कड़ी अन्तिम क्षणों तक अखण्ड रही। निश्चित ही उनकी तपोमयी चेतना हार्दिक अभिनंदनीय है।

(2) **भक्ति निष्ठ व्यक्तित्व-** परमात्मा के प्रति भक्ति भरा अहोभाव एवं गौरव उनका अपने आप में अद्‌भुत गुण था। आज कोई भी व्यक्ति यात्रा पर निकलता है तो मोबाईल या पर्स लेना नहीं भूलता है और भाया तो ऐसे थे कि अपने सुटकेस में पूजा के वस्त्र और अष्टप्रकारी पूजा की सामग्री लेना नहीं भूलते थे। प्रभु भक्ति, पूजा, दर्शन, जाप, ध्यान और वंदन उनकी दिनचर्या का पहला नियम था। और तो और, चाहे उपवास या बेले-तेले का पारणा हो, तब भी पारणा तो तभी होता जब तक प्रभु-पूजा सम्पन्न न हो जाती। उन्होंने शत्रुंजय की दो नवाणुं यात्राएँ सम्पन्न की। यह भक्ति ही उनकी शक्ति थी जो उन्हें निरन्तर श्रावकत्व के सोपानों पर आगे ही आगे बढ़ाती रही।

(3) **गुरु निष्ठ व्यक्तित्व-** आदरणीय 'भाया' के रोम-रोम में पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री के प्रति अद्‌भुत समर्पण भाव था। जो पूज्य प्रवर ने फरमा

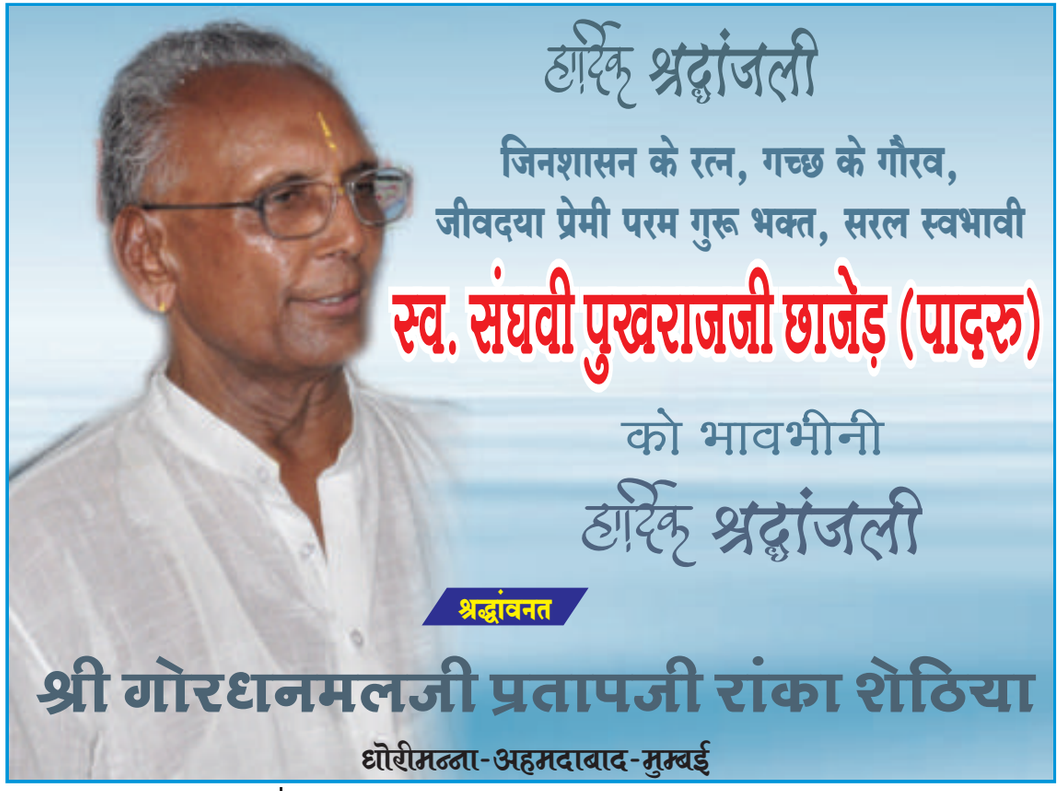

दिया, वह तहत्ति। दीक्षा, प्रतिष्ठा, उपधान, चातुर्मास के प्राय: हर अवसर पर वे पधारते और वहाँ मात्र उपस्थिति ही दर्ज नहीं करवाते अपितु वातावरण को भी भक्ति और श्रद्धा के रंगों से सजा देते। उनके मुस्कुराते होंठ और थिरकते पाँवों के साथ हजारों पाँव थिरक उठते। किसी भी साधु-साध्वी की कमी देखना तो स्वभाव में ही नहीं था। निश्चित ही उनकी गुरु निष्ठा अनुपमेय थी।

(4) **शासन-निष्ठ व्यक्तित्व-** भाया जिनशासन के आधार स्तंभ, गच्छ के गौरव और श्रीसंघ के प्राण थे। उनकी प्राणशक्ति रगों में बहने वाला खून कम और अपितु शासन निष्ठा अधिक थी।

वे जिनशासन को प्राप्त कर अपने आपको जितना भाग्यशाली महसूस करते थे, उतना ही गौरव और आनंद अच्छे गच्छ पर भी था। दादा गुरुदेव के हर काम में सदैव समर्पित भाव से जुड़े रहे। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ-मुम्बई के अध्यक्ष पद पर रहकर अपनी निस्वार्थ सेवाएँ दी तो श्री जिनहरि विहार-पालीताणा, जहाज मंदिर-माण्डवला, गज मंदिर-केसरियाजी, कुशल वाटिका-बाड़मेर, श्री जैन संघ-पादरू आदि अनेक ट्रस्टों में अनेक पदों का निर्वहन भावनिष्ठा से किया तथा तन-मन-धन से समर्पित रहकर उनके विकास एवं विस्तार में अपनी क्षमताओं का भरपूर उपयोग किया। भारत भर में 'भाया' की अपनी एक निर्मल-अमल छवि थी पर अहंकार एक अंश में भी उन्हें छू नहीं पाया।

अभी जब इचलकरंजी प्रवेश समारोह पर पधारे, तब विशेष अतिथियों की लिस्ट मैं अग्रज रमेश लूंकड से तैयार करवा रहा था। अतिथि नाम के साथ उनके पद आदि का उल्लेख करना था। संयोग से 'भाया' वहीं उपस्थित थे। मैंने पूछा- भाया! आप अभी किन-किन संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

उनकी निरभिमानता उनके शब्दों में अभिव्यक्त

हुई- मनित महाराज! मैं तो बस इतना ही जानता हूँ कि 'मैं शासन का एक पूजारी हूँ।' अत: पदोल्लेख की आवश्यकता कहाँ है? मेरे दो बार पूछने पर भी मुझे टरकाते हुए वे उपाश्रय की सीढ़ियाँ उतर गये और मेरा माथा उनके अभिनंदन में झुक गया। निस्संदेह ऐसे व्यक्तित्व का स्पर्श पाकर पद स्वयं गौरवान्वित हुए हैं। संघ और गच्छ को सदा उन्होंने माई-बाप के रूप में देखा और उसकी पूजा की। इन संदर्भों में 'भाया' एक संघ निष्ठ एवं गच्छ समर्पित श्रावक रत्न थे।

(5) **पितृनिष्ठ व्यक्तित्व-** भाया को जितना गौरव गुरुजनों को पाकर था, उतना ही गौरव अपने संस्कारदाता माता-पिता को पाकर भी था। श्री पूनमचंदजी बा सा जिनका स्वर्गवास पिछले वर्ष ही हुआ, वे स्वयं एक आदर्श व्यक्तित्व थे।

उनका जन्मदाता के प्रति लगाव, गौरव और आस्था इस छोटी सी पंक्ति से मुखर है कि चातुर्मास वे भले ही कहीं भी करें पर संवत्सरी की महाराधना अपने पिताश्री की छत्र-छाँव के तले ही होती, चाहे वे पादरू में हो, चेन्नई में हो अथवा कहीं और हो। उनका यह अनमोल गुण उनकी मातृ-पितृ भक्ति को सर्वांगीण रूप से रेखांकित करता है।

(6) **सेवा निष्ठ व्यक्तित्व-** वेयावच्च और भाया को अलग-अलग नहीं देख सकते, वैसे ही जैसे सूर्य और उसकी किरण को। भाया की संघ-सेवा यत्र-तत्र-सर्वत्र उपलब्ध थी।

उनकी वेयावच्च-निष्ठा तो सबसे अलग। साधु-साध्वी में वे गुरु भी दर्शन करते तो पुत्र-पुत्री के भी।

साधु-जीवन परीषहों एवं प्रतिकूलता की लम्बी डगर है। विहार, केशलोच, तप, स्वाध्याय आदि के लिये पूरी शक्ति चाहिये अत: डाईट में क्या लेना चाहिये? इस तथ्य से वे सुपरिचित थे। वे इतने भक्ति-भाव से वोहराते थे कि उन्हें यह ख्याल तक नहीं रहता कि इतनी सामग्री खपेगी या नहीं। उस समय उनके होंठ या आँखें ही नहीं, अंग-अंग श्रद्धा से थिरक उठता।

(7) **संस्कार निष्ठ व्यक्तित्व-** संस्कारों की सुगंध से सुवासित व्यक्तित्व यानि 'भाया'। यद्यपि उनकी संस्कार प्रधान जीवन शैली में उनकी पूर्ण समर्पिता धर्मपत्नी भवानीदेवी का पूर्ण सहकार था। उन्होंने अपनी सन्तान राजेशजी, दिनेशजी और सुरेशजी को वे सारे गुण विरासत में दिये जो एक शासन समर्पित चेतना में हुआ करते हैं। स्वयं आत्मीय राजेशजी छाजेड़ को मैंने एक बार वार्तालाप के दौरान पूछा था- राजेशजी! आप संघ, शासन और गच्छ के लिये इतना समय कैसे दे पाते हैं जब आज एक व्यक्ति के पास स्वयं और परिवार के लिये भी समय नहीं है?

राजेश ने कहा- मरासा! मैंने कभी भी अपने व्यापार के अतिविस्तार पर ध्यान नहीं दिया। मैंने अपने दादाजी और पिताजी से संतोष का धन वसीयत के रूप में पाया है।

और मरासा! मैं चाहूं तो अल्पावधि में मैं धन के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ सकता हूँ पर मेरा लक्ष्य मात्र धन कमाना नहीं है। मेरी आँखों के सामने परमात्मा महावीर की आज्ञा और न्याय-नीति रहती है। मुझे अभावों में जीना पड़े तो भी मंजूर पर मैं उन कम्पनियों के शेयर कभी नहीं खरीदता तो महारंभ-समारंभ में अपनी पूंजी का विनियोग करते हैं। यद्यपि उन शेयर्स को खरीदकर मैं बहुत पैसा जोड सकता हूँ पर मैं धन से ज्यादा महत्त्व धर्म को देता

हूँ।

राजेशजी के शब्दों में 'भाया' प्रदत्त संस्कारों की अनुगूंज थी। 'जो माँ-बाप सन्तान के लिये मात्र धन, सत्ता, सम्पत्ति, दुकान छोड़कर जाते है, वे शीघ्र ही भूला दिये जाते हैं।' पर भाया तीनों पुत्रों, पुत्रवधूओं, पौत्र, पौत्री एवं परिजनों के सदैव स्मरण में रहेंगे क्योंकि उन्होंने वसीयत में संस्कार और विरासत में शासन-समर्पण छोड़ गये।

0 कलम छोटी है और भाव विशाल!
0 समय अल्प है और गुण महान्!!

जहाज मन्दिर में सन् 2008 के चातुर्मास व उपधान में ऐतिहासिक योगदान

'भाया' गुणों के एक अक्षय कोष थे। उस कोष का बयान संभव नहीं है, उसका मात्र अनुभव किया जा सकता है।

यद्यपि भाया पर लिखे तो एक महा-अभिनंदन ग्रन्थ बन जाये फिर भी यह लघु आलेख उसी तरह पर्याप्त है जैसे छोटी-सी खिड़की से अनन्त आकाश की महिमा और गरिमा को जाना जा सकता है।

काल की होनी कहे या क्रूरता, पर उसने स्मृति पटल पर 'भाया' की अकल्पित चिरविदायी का आलेख लिखा और एक शासन स्तंभ, संघ रत्न और गच्छ गौरव को छीनकर एक महान् क्षति और त्रुटि की।

किसी ने कितना सटीक कहा है-

ए पवन! तुझसे भी एक नादानी हुई!
फूल तूंने वो चुना,
जिससे गुलशन में वीरानी हुई॥

यद्यपि भाया को इतना जल्दी नहीं जाना था। उनकी और भी अनेक हसरतें थी। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था- मनितजी! मेरा अब एक ही सपना है कि पूज्य गुरुदेव की निश्रा में सम्मेतशिखरजी तीर्थ के पदयात्रा संघ का आयोजन हो। उसके पश्चात् संघीय कार्यों से निवृत्त होकर मैं केवल आत्मा की शुद्ध साधना करूंगा।

ओह! सारे सपने टूट गये। अरमानों के फूल मुरझा गये। ये कभी न सोचा था कि 'भाया' इस तरह इतनी जल्दी सदा-सदा के लिये हमसे दूर ऐसे पड़ाव पर चले जायेंगे, जहाँ से वे हमारे बीच कभी नहीं आयेंगे।

अब बस! उनकी स्मृतियों और सद्गुणों के गवाक्ष से निहार कर उनकी उपस्थिति कल्पना करनी होगी। परमात्मा एवं दादा गुरुदेव से एक ही कामना है कि वे अल्प भवी होकर शीघ्र ही संयम की शुद्ध साधना करें और कषाय मुक्त होकर परम ध्येय को उपलब्ध करे।

अन्त में इतना ही कहूंगा....

बुझ गयी शमां,
पर रोशनी अभी भी महफिल में है।
तूं नहीं है यहाँ, पर तेरी यादें दिल में है।

हार्दिक श्रद्धांजली

जिनशासन के रत्न, गच्छ के गौरव,
जीवदया प्रेमी परम गुरू भक्त, सरल स्वभावी

स्व. संघवी पुखराजजी छाजेड़ (पादरु)

को भावभीनी
हार्दिक श्रद्धांजली

श्रद्धांवनत

शा. बाबूलाल, भैरूचंद, नरपतचंद लुणिया परिवार

धोरीमन्ना-अहमदाबाद

हार्दिक श्रद्धांजली

जिनशासन के रत्न, गच्छ के गौरव, जीवदया प्रेमी
परम गुरू भक्त, सरल स्वभावी, मधुर वाणी

स्व. संघवी पुखराजजी छाजेड़ (पादरू)

को भावभीनी हार्दिक श्रद्धांजली

बालोतरा निवासी संघवी अमृतलाल पुखराजजी कटारिया

श्रद्धांवनत

संस्थापक अध्यक्ष - कटारिया एवं कटारिया संघवी फाउण्डेशन, मुंबई
उपाध्यक्ष - श्री बालोतरा प्रगति मंडल, मुंबई
महामंत्री - श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ, मुंबई
संरक्षक - श्री नाकोड़ा तीर्थ पूर्णिमा पदयात्रा संघ, भैरव सेवा समिति, बालोतरा

फर्म : महाभैरव मेटल इण्डस्ट्रीज

7, महावीर कामर्शियल प्रिमाईसेस, खेतवाड़ी बैक रोड़,
13वीं खेतवाड़ी गली के सामने, मुंबई-400004
मोबाईल नं. 9320425596, 98190 25596,
फोन 022-23864648 (ऑ) 022-66393781 (घर)
Email : techno108@gmail.com/mahabhairavmetal@gmail.com

संस्मरण

आत्मीयता की मिशाल

मुनि समयप्रभसागरजी म.

एक वर्ष से भी कम अवधि में संघवी श्री पूनमचन्दजी छाजेड़ व उनके सुपुत्र श्री पुखराज जी छाजेड़ का स्वर्गवास होना मात्र छाजेड़ परिवार की ही नहीं, मात्र खरतरगच्छ की ही नहीं जिनशासन की अपूरणीय क्षति है।

एक विराट् व्यक्तित्व को मात्र कुछ शब्दों में कैसे अभिव्यक्त किया जाए। एक ऐसा उपवन जहाँ गुणों के रंग-बिरंगे फूलों की छटा-सा निखरा जीवन।

सभी साधु-साध्वियों जी के बीच 'भाया' (भैया) संबोधन से सम्बोधित होने वाले, उदारता के साथ वैयावच्च के लिए सदैव तत्पर, सभी साधर्मिकों के बीच मीठी मनुहार करने वाले, संघ व गच्छ के कार्य के लिए सदैव अग्रणी, परम गुरु भक्त, अपने गच्छ के प्रति पूर्ण निष्ठावान होने के साथ सभी के प्रति सद्भाव वाले।

मेरा परिचय जहाज मंदिर माण्डवाला में अक्टूम्बर 2008 चौसठ प्रहरी पौषध के दौरान हुआ। इतने अल्प समय में इतनी आत्मीयता से जुड़ाव हुआ कि जैसे बहुत पुराने सम्बन्ध हो। जब भी मिलते हंसी मजाक के द्वारा संयम जीवन के आदर्शों के प्रति मुझे अनवरत प्रेरणा करते। कहते- अब नहीं तो कब करोगे।

मुम्बई चातुर्मास में तपस्वीयों के पारणे के समय इनके द्वारा बहुमानपूर्वक की जाने वाले साधर्मिक भक्ति और मेहमानों को की जाने वाली मनुहार हृदय को भावविभोर बना देती।

कुशल वाटिका प्रतिष्ठा के समय इनके द्वारा साधु साध्वी वैयावच्च समिति के संयोजन का कार्य मेरे लिए चिर स्मरणीय रहेगा। व्यवस्था के प्रति सजगता के साथ इनके द्वारा उदार व उत्कृष्ट भावों से की जाने वाले सुपात्र दान की क्रिया तो वहाँ पास में खड़े सभी के भावों में अभिवृद्धि करने वाली होती थी। मात्र खरतरगच्छ का ही नहीं जिनशासन का कोई भी कार्य करने के लिए सदैव तत्पर। अभी इसी वर्ष फरवरी में इनके संयोजन में हुई आरीसा भवन की प्रतिष्ठा इसका उदाहरण है।

श्री पुखराजजी आत्म समाधि को प्राप्त करते हुए शीघ्र ही निकट के भवों में मोक्षगामी बने।

हार्दिक श्रद्धांजली

स्व. संघवी पुखराजजी छाजेड़ (पादरु)

पूर्व अध्यक्ष -
श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ, मुंबई

को भावभीनी

हार्दिक श्रद्धांजली

मांगीलाल टी.शाह
(अध्यक्ष श्री जैन श्वे. खरतर. संघ मुंबई)

संघवी अमृतलाल कटारिया
(महामंत्री)

संघवी मुकेश मरडिया
(अध्यक्ष-म.यु.प.)

श्रीमती भागुबेन बोथरा
(अध्यक्षा-ख.म.प.)

श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ, मुंबई
श्री मणिधारी युवा परिषद, मुंबई
श्री खरतरगच्छ महिला परिषद, मुंबई

36/40, हिंगलाज भवन, दूसरा माला,
गुलालवाड़ी, मुंबई 400004 महाराष्ट्र

संस्मरण

एक गौरव पुरुष

मुनि विरक्तप्रभसागरजीम.

यद्यपि मैं लेखक तो नहीं हूँ फिर भी मैं आज एक ऐसे अनूठे श्रावक के व्यक्तित्व के बारे में लिख रहा हूँ, जिनसे मेरा परिचय जहाज मंदिर मांडवला में हुआ था। चातुर्मासार्थ पधारे थे श्रीमान् सा पुखराजजी छाजेड़। उनका साधु- साध्वीजी भगवंत के प्रति परम अपनत्व भरा व्यवहार तो था ही पर मेरे प्रति भी उनका उतना ही प्रेम था। वैराग्य काल में जब मैं नाश्ता अथवा भोजन करने जाता था, तब वे तुरन्त मेरे पास चले आते और मुझे मान-मनुहार के साथ खाना खिलाते और मैं यह कहकर जब मना करता कि ये मुझे नहीं खाना या ये चीज मुझे नहीं भाती तब वे जबरदस्ती खिलाते और कहते कि अभी अगर नहीं खाओगे तो पढ़ोगे कैसे और पढ़ोगे नहीं तो भविष्य मैं शासन के कार्य कैसे करोगे।

मेरे और उनके बीच दादा-पोते के आत्मिय संबंध रहे, उन्होंने मुझे इतना वात्सल्य दिया जिसका मैं अपने शब्दों के द्वारा बयां नहीं कर सकता। मांडवला के पश्चात खजवाना संघ, मोकलसर संघ, मुम्बई चातुर्मास, पालीताणा चातुर्मास में उनका निरंतर स्नेह पूरित वात्सल्य मिलता रहा।

उनके एक्सीडेंट के अप्रिय समाचार सुनकर बहुत दर्द का अनुभव हुआ। अभी तो चातुर्मास प्रवेश पर आये थे और अचानक यह दुर्घटना घट गयी।

हे कर्मराजा। तूं कितना निष्ठुर है कि तूंने ऐसे अनमोल श्रावक को हमसे छीन लिया। मुझ पर दादा का वात्सल्य लुटाने वाले महाश्रावक को छीन लिया। सच्चाई तो यह है कि कर्मराजा के आगे सबको घुटने टेकने ही पड़ते है क्योंकि कर्मराजा किसी की नहीं सुनता।

मैं उनको अन्तर्मन से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

खरतरगच्छ संघ ने ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जैन समाज ने एक अनूठे अनमोल शासन के सितारे को खोया है। मैं शासनदेव से यही प्रार्थना करता हूँ कि उनका प्रेम और वात्सल्य मेरे ऊपर परोक्ष रूप से बरसता रहे।

संस्मरण

भाया : एक विशिष्ट श्रावक

साध्वी डॉ.विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

आज उदित हुए सूर्य ने हमसे बहुत कुछ छीन लिया है। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि संघवी श्री पुखराजजी छाजेड़ जैसे सक्रिय एवं ऊर्जा से परिपूर्ण व्यक्ति इस दुनिया से इतनी शांति के साथ हमेशा के लिये हमसे बिछुड़ जायेंगे पर यह अकल्पित घटना घट गयी। इस दर्दनाक घटना ने माता से पुत्र छीना, पत्नी से पति छीना, पुत्रों से पिता छीना पर जिनशासन का स्तंभतुल्य एक विशिष्ट श्रावक भी छीन गया। हमने श्री पुखराजजी को श्रावक के रूप में तो पाया ही था, पर उससे भी बढ़कर उनमें हमने आत्मीयता से छलकती संवेदनाएं पायी थी।

मैंने श्री छाजेड़ को सर्वप्रथम 1985 में पादरू चातुर्मास में देखा था। पूज्य भाई म. के साथ हमारा चातुर्मास पादरू में था। उनका नियम था वे कहीं भी हो, संवत्सरी अपने पिताजी के साथ ही करते थे। यद्यपि पर्युषण में वे नियमित अट्ठाई करते थे। तपश्चर्या होते हुए भी लाख पिताजी के मना करने के बावजूद संवत्सरी को वे पादरू आ ही गये थे।

श्यामवर्णी ऊँचा कद... स्फूर्तिभरी चाल... चेहरे पर दबंगभाव... आँखों से छलकता अपनत्व... कलाई में राड़ो घडी.. . जेब में क्रोस पेन... अंगुली में हीराजडित अंगुठी... यह था उनका बाह्य परिचय! गहरी श्रद्धा... जिनशासन के प्रति संपूर्ण समर्पण... गुरु भगवंतों के प्रति अपूर्व निष्ठा... वैयावच्च की तीव्र भावना... यह था उनका आंतरिक परिचय!

यद्यपि प्रथम मुलाकात में उनकी तेज आवाज में अपनत्व की मीठी धारा बह न सकी। उनकी गरजती आवाज किसी को भी एक बार तो डरा देती थी पर ज्योंहि आवाज में छिपी मीठास हृदय को छूती थी तो लगता 'क्या यह व्यक्ति हमारे लिये अजनबी है?' रोम-रोम जैसे उत्तर देने के लिये तत्पर हो जाता ''हरगिज नहीं।'' यह व्यक्ति तो खूब जाना पहचाना है।

फिर तो उनका आना-जाना बढ़ता रहा। वक्त के साथ मैंने देखा- वे बहुत बदलते जा रहे हैं। उनका झुकाव बाह्य दिखावों से हटकर अध्यात्म की ओर होने लगा है। बदलाव उनके आचरण में आ रहा था। बीतते वक्त के साथ उन्होंने अपने योग्य पुत्रों के कंधों पर व्यापार की जिम्मेदारी डाल दी और स्वयं धीरे-धीरे निवृत्त होते गये।

तीनों पुत्रों को राजेश को मुम्बई, सुरेश को चेन्नई एवं दिनेश को दिल्ली में स्थापित कर स्वयं पूर्ण रूप से शासन को समर्पित हो गये।

जिस महंगी जिन्दगी को वे बचपन से जी रहे थे, उसमें उन्होंने परिवर्तन कर लिया। एक समय था जब एअरपोर्ट होता तो बस का विचार ही न करते, पर अब अगर वक्त होता तो वे उपलब्ध किसी भी साधन द्वारा यात्रा कर लेते। अब उनका ध्यान शरीर केन्द्रित न था बल्कि अब उनकी प्रत्येक क्रिया में आत्मा थी।

पिताजी पूनमचंदजी प्रारम्भ से ही चेन्नई थे और अब भी वहीं रहना चाहते थे। पिताजी को अकेला छोड़ना उन्हें गंवारा नहीं हुआ अत: उन्होंने सुरेश, इन्दु को उनकी सेवा में रखा। उन्होंने भी अपने पिताजी की आज्ञा की पालना करते हुए जिस तरह अपने दादाजी की सेवा की, निसंदेह अपने आप में अनूठी है।

पुखराजजी क्रमश: धार्मिक एवं सामाजिक जीवन की ओर बढ़ते रहे। प्रतिदिन प्रभुपूजा, नवकारसी आदि तो वे बचपन से करते ही थे, अब प्रतिक्रमण एवं वर्षीतप की ओर भी उन्होंने अपने कदम बढ़ा दिये।

उन्होंने पूरे परिवार के साथ वर्षीतप की आराधना की। पिताजी पूनमचंदजी एवं माताजी ने तथा स्वयं ने सपत्नीक वर्षीतप की आराधना करके शरीर में बढ़ रही बीमारियों को भी जैसे चुनौती दी।

मुझे याद है 1992 में पूज्य उपाध्यायश्री का चातुर्मास सांचोर में था। उन्हें उस समय हार्ट से संबंधित प्रथम बार तकलीफ हुई थी तब भी वे सभी के मना करने के बावजूद सांचोर पधारे थे। मैंने कहा- भाया! अब कुछ आने-जाने में सावधानी रखो। तपाक से कहा- यह संभव नहीं है। जीवन रहते मैं घर पर बिस्तर

की शरण नहीं ले सकता। जब तक जीवन है, मैं सार खींच लेना चाहता हूँ।

मैंने स्वयं से कहा- इस व्यक्ति के शरीर में बीमारी आयी है, हृदय में नहीं। इसका आत्मविश्वास अकंप है। इस व्यक्ति को कोई भी शारीरिक पीड़ा विचलित नहीं कर सकती और वाकई में अंतिम समय तक उनका आत्मविश्वास वैसा ही रहा।

भाया धर्म की जो भी प्रवृत्ति करते, उसमें पूर्ण शांति एवं धीरज रखते थे। घटना दो दशक पूर्व की है। हम उस समय पालीताणा में थे। अचानक भाया भी अपनी धर्मपत्नी के साथ वहाँ आ गये। उनका निवेदन रहा कि दादा की यात्रा करने के लिये आप भी पधारो। मुझे भी जाना ही था। मैंने उनको कहा- चलना तो मुझे भी है, परन्तु पुन: जल्दी आना है। नौ बजे उस दिन एक बहिन की दीक्षा का कार्यक्रम था।

दादा के दरबार में पहुँचे। इतनी मुश्किल से प्राप्त दादा को छोड़ने का मन मेरा भी नहीं था पर कर्तव्य की डोर मुझे खींच रही थी। जल्दी-जल्दी चैत्यवंदन करने के मूड में थी। उन्होंने कहा-नहीं?उतरने में हम थोड़ा जल्दी करेंगे पर भगवान की भक्ति में समय की कटौती नहीं करेंगे।

पूज्य उपाध्यायश्री की निश्रा में हमारा चातुर्मास मुम्बई में था। उपधान आराधना कार्यक्रम के संयोजक भाया ही थे। मुझे याद है चातुर्मास एवं उपधान आराधना को उन्होंने कितनी तत्परता एवं परिश्रम से संभाला था। सूर्योदय होते ही पूजा प्रतिक्रमण से निवृत्त होकर भाया सीधे रसोड़े में पहुँच जाते।

एक कहावत है- भोजन मां के हाथ का होना चाहिये।

उनके हृदय में इतना वात्सल्य था कि चौके में जाते ही वे ''माँ'' स्वरूप हो जाते थे। इतने प्रेम एवं मनुहार से खिलाते थे कि घर में भी व्यक्ति क्या खिलायेगा!

मुम्बई हमारा प्रवेश नहीं हुआ था। कुछ मेहमान आ गये। मुम्बई में स्थान की समस्या! कहाँ रूकना?वे होटल जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि भाया वहाँ पहुँच गये। आँखें तरेरते हुए कहा- आपको होटल जाने का विचार ही कैसे आया?अरे! साधर्मी भाई मिलते कहाँ हैं, कहते हुए उसी समय उनका सामान गाड़ी में डाला और अपने घर ले गये।

मुम्बई चातुर्मास एवं उपधान संपन्न होने के बाद हम यह सोच रहे थे कि कहाँ रूके, जिससे वयोवृद्ध प.पू. प्रकाशश्रीजी म. को तकलीफ न हो। मैं इधर-उधर उपनगरों में विहार करके जाऊँ तो भी कोई संभाल सके। आहार पानी की भी असुविधा न हो और किसी को कोई तकलीफ भी न हो! उस समय भी भाया आगे आये। निवेदन करते हुए कहा- ऐसा लाभ मुझे कब मिलेगा?आप मेरे फ्लैट के पास ही खाली फ्लैट में बिराजो। सारी सेवा का लाभ मुझे दें।

हमारा ग्रुप लगभग वहाँ एक माह से भी ज्यादा रूका। निसंदेह भाया का संयमी के प्रति बहुमान उनकी संयम रूचि को प्रकट करता था। उनकी यह दृढ़ मान्यता थी कि क्रिया में हमारी गच्छनिष्ठा प्रकट होनी चाहिये पर सेवा भक्ति एवं वैयावच्च में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिये। वहाँ तो मात्र हमारी नजर पंच महाव्रतों पर रहनी चाहिये। अगर कोई वैयावच्च एवं सेवा में पक्षपात अथवा भेदभाव रखना है तो उसका श्रावकत्व लांछित होता है।

भाया का व्यक्तित्व विशिष्ट एवं अनूठा था। उनका अनूठापन इसी में निहित था कि उनका हाथ जैसे

दानेश्वरी कर्ण का पर्याय था। उनके हाथ मानो देने के लिये ही बने थे। ना कहना तो जैसे उन्होंने सीखा हीं नहीं था।

गोचरी बहराना और किसी भी मेहमान को भोजन कराना तो कोई उनसे सीखे। अच्छी से अच्छी सामग्री वे परमात्मा के मंदिर में, गुरु भगवंत के पात्र में एवं स्वधर्मी की थाली में रखते थे। पता नहीं ऐसा उदार हृदय एवं ऐसी उमड़ती भावना उन्होंने किस पुण्योदय से प्राप्त की थी।

उनका स्मरण मुख्यत: तीन बातों के कारण विशेष होता है। उनकी क्रियानिष्ठा, गुरुनिष्ठा एवं वैयावच्च।

आठ साल पूर्व उन्होंने एक बार अपनी धर्मपत्नी के साथ वर्षीतप शुरू किया। बस फिर क्या था! वर्षीतप का ऐसा रंग चढा कि उसे अंतिम समय तक नहीं छोडा। उन्हें बहुधा कहा जाता- इतनी यात्रा.. इतना कामकाज... अब तपस्या कम कर दे, पर किसी की माने वो भाया कैसा?चातुर्मास में जो भी तप चलता, वे उसमें जुड़ जाते। अभी गतवर्ष लूणिया दायमा परिवार द्वारा आयोजित पालीताणा में पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. की निश्रा में चातुर्मास की आराधना चल रही थी। वहाँ शत्रुंजय तप की घोषणा हुई। भाया सभी के हजार समझाने के बाद भी नहीं माने और उन्होंने भी शत्रुंजय तप, जिसमें बेले एवं तेले दोनों थे, की आराधना की।

तप के साथ प्रभुभक्ति उनमें गजब थी। विधि-विधान एवं प्रभु की आज्ञापालन में उन्हें कभी संकोच नहीं होता था। अष्टप्रकारी पूजन की सामग्री युत बड़ा बेग लेकर जब वे मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ते थे तो लगता था कि ऐसे उत्कृष्ट श्रावक को पाकर हमारा शासन धन्य हो गया है।

मंदिर में एक बार मैं दर्शन कर रही थी और भाया भी पहुँच गये। मैंने देखा- उन्होंने दर्शन किये और उसके बाद प्रदक्षिणा लगायी पर उनकी प्रदक्षिणा में

एक विशिष्टता देखकर मैं चौंकी?विशिष्टता छोटी थी पर मेरे लिये गहरी थी। उन्होंने प्रत्येक प्रदक्षिणा में भगवान के सामने पंचांग प्रणिपातपूर्वक भगवान को वंदना की।

प्रतिदिन प्रभुपूजा, प्रतिक्रमण, गुरु पूजन एवं ज्ञानपूजन अनिवार्य था।

गुरुभक्ति तो जैसे बेजोड़ थी। इन 10 वर्षों में पूज्य उपाध्याय श्री के दो चातुर्मास मुम्बई में हुए। प्रथम चातुर्मास में संयोजक यद्यपि वे नहीं थे पर संयोजक से कम उनकी सेवाएं नहीं थी। चातुर्मास में सिद्धितप एवं अन्य विभिन्न प्रकार की तपश्चर्यादि हुई। भाया जैसे सवेरा होने का इंतजार करते थे। उनकी गाड़ी सूर्योदय के समय आती जो वापस रात्रि को 10 बजे तक ही जा पाती थी।

गुरु भगवंतों का आवश्यक स्वास्थ्य संबंधी काम हो अथवा अध्ययन संबंधी, एक बार कहने की देरी थी, काम हुआ ही समझो।

ऐसा नहीं कि मात्र गुरुदेव का चातुर्मास ही उन्होंने संभाला। अन्य भी कोई चातुर्मास होता तो उसमें भी वे उतने ही सक्रिय रहते थे।

उनका एक ही सिद्धांत था- गुरु भगवंत की सेवा तो सौभागी को मिलती है। उन्हें एक नहीं दस मिलेंगे पर हम इस पुण्यकार्य से वंचित क्यों रहे?

पूज्य उपाध्यायश्री तो उनके रोम-रोम में बसे थे। उनकी वंदना करते-करते कई बार उनकी आँखें भीग जाती। वे कहते थे- हमारा एवं हमारे शासन का सौभाग्य है कि हमें ऐसे तेजस्वी पर शान्त, विद्वान पर सरल गुरु भगवंत प्राप्त हुए

हार्दिक श्रद्धांजली

उम्र
68 वर्ष

स्वर्गवास
12.7.2014
(मुम्बई)

स्व. संघवी पुखराजजी छाजेड़ (पादरु)

अध्यक्ष - श्री शीतलनाथ भगवान एवं जिनकुशलसूरी दादावाड़ी ट्रस्ट-पादरु

मीठी मधुर स्मृतियां आपकी कभी नहीं मिट पाएगी,
आपका व्यवहार आपकी बातें सदैव हमें याद आएगी ।
आपका उत्कृष्ट व्यक्तित्व प्रेरित सदा करता रहेगा,
आपका आत्मविश्वास हम में होसला भरता रहेगा ।
हे आदरणीय अर्पित है, विनम्र हृदय से भावांजलि,
स्वीकार करें हे पुण्य आत्मा, हम सबकी यह श्रद्धांजलि

श्रद्धावनत

उपाध्यक्ष : कैलाशकुमार भंवरलालजी संकलेचा, सचिव : नेमीचंद हस्तीमलजी कटारिया
सहसचिव : पुखराज रुपचंदजी तातेड़, कोषाध्यक्ष : मोहनलाल हरकचंदजी गुलेछा
सह कोषाध्यक्ष : भीकचन्द तोगाजी गुलेछा एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्यगण एवं पादरु निवासी

निवेदक :- श्री शीतलनाथ भगवान एवं श्री जिनकुशलसूरी दादावाड़ी ट्रस्ट, मैनपेढी-पादरू
Regd. Office : 75, N. N. St. CHENNAI - 03, Mo. : 98410 85511

हैं। उन्हीं की मेहनत का यह परिणाम था कि पादरू में दो बार एवं मुम्बई में एक बार जन्मदिन मनाया गया था। दिल खोलकर उस समय वे खर्च करते एवं करवाते थे। उपाध्यायश्री के बारे में बोलते-बोलते तो वे इतने भावविभोर हो जाते थे कि आधा वे बोलते और आधा उनकी आँखें।

वैयावच्च करने वाला तो उन जैसा कोई विरला ही होगा। भारत में पूज्य गुरुदेवश्री निश्रा में कहीं भी कोई भी आयोजन होता, वे वैयावच्च की मानसिकता लेकर पहुँच जाते। वैयावच्च की सपूर्ण जिम्मेदारी उनकी ही होती। चाहे वर्षीतप के तपस्वी हो अथवा साधु साध्वी भगवंतों को गोचरी का लाभ, वे सभी की अत्यंत भावपूर्वक भक्ति करते। सभी का लाभ लेने के बाद वे अपना बियासणा करते थे। पालीताणा में अभी हाल हुए चातुर्मास में जिस दिन पिताजी के बीमारी की सूचना से उनको वहाँ से विदायी हुई तब पता चला कि वे हमारे संघ के लिये कितने महत्त्वपूर्ण अंग है।

कुशल वाटिका प्रतिष्ठा की बयार तो अभी मंद भी नहीं पड़ी है। बाडमेर में चल रही सामूहिक वर्षीतप की आराधना के सारे तपस्वी पारणे के लिये कुशल वाटिका में आमंत्रित थे। इतने तपस्वी.... और इतनी ही विशाल संख्या में साधु साध्वी भगवंतों की उपस्थिति! उन्होंने उस समय जो सुव्यवस्थित भावों से परिपूर्ण वैयावच्च की, वो सदा याद रहेगी।

जिसने एक बार उनके हाथ से भोजन कर लिया अथवा एक बार उनसे गोचरी वहोर ली, अंतिम सांस तक वह उन्हें भूल नहीं सकता।

''कडवा बोल और मीठा भोजन'' व्यक्ति नहीं भूलता। भाया निसंदेह जनता के दिलोदिमाग में छाये रहेंगे। भाया की कर्म निर्जरा का उपाय बड़ा अनूठा था। वे पालीताणा में प्रथम चातुर्मास में छत पर सोते थे। मच्छरों का उपद्रव नहीं बल्कि महा उपद्रव। मैंने कहा-भाया! आप मच्छरदानी लगाओ। अन्यथा आराधना में विघ्न आ सकता है।

बेफिक्र अंदाज में उन्होंने उत्तर दिया- साहेबजी। आज तक शरीर को बहुत संभाला। शरीर को खूब सुख दिया। आज इसे थोड़ा तपने दो। पता तो चले कि कष्ट क्या है! वे आराम से मच्छरों के बीच शयन करते थे।

वे बहुत पुण्यशाली थे। व्यवहारिक सारी स्थितियाँ उन्हें अनुकूल मिली थी। जिनशासन मिला। ऐसा परिवार मिला जिन्होंने जन्म से ही मानवता एवं श्रावकत्व के संस्कार दिये। दानवीरता, सामाजिकता एवं गुणानुराग उन्हें वंश परम्परा से मिले। उनके पिताजी संघवी श्री पूनमचंदजी छाजेड़ अत्यंत सरल तपस्वी व्यक्ति थे। 80 साल की उम्र में उन्होंने अपनी धर्मपत्नी के साथ वर्षीतप किया था। पिताजी जहाँ इतने धार्मिक थे, वहाँ माँ का धार्मिक होना सहज था।

उन्हें पुण्य से धर्मपत्नी सुश्राविका भवानी देवी का जीवन के हर कदम पर पूरा साथ मिला। मैं उन्हें तीन दशक से देख रही हूँ पर तीन दशक में ऐसा एक भी मौका नहीं आया जब उन्होंने भाया की किसी बात का विरोध किया। विरोध तो दूर भाभी ने उनकी हर बात पर अपनी स्वीकृति की मोहर ही मारी।

बहुत पुरानी बात है। वे कोटा चातुर्मास में दर्शन करने के लिये आये थे। भाया की अनुपस्थिति में मैंने भाभी से पूछा -यहाँ से आगे कहाँ जाना है?अत्यंत सरलता से उन्होंने अपनी भाषा में कहा- मुझे कुछ पता नहीं, जहाँ जायेंगे, वहाँ पीछे-पीछे चली जाऊंगी। सुनकर मेरी आँखें चौड़ी हो गयी। मैंने आगे कहा- आप कुछ

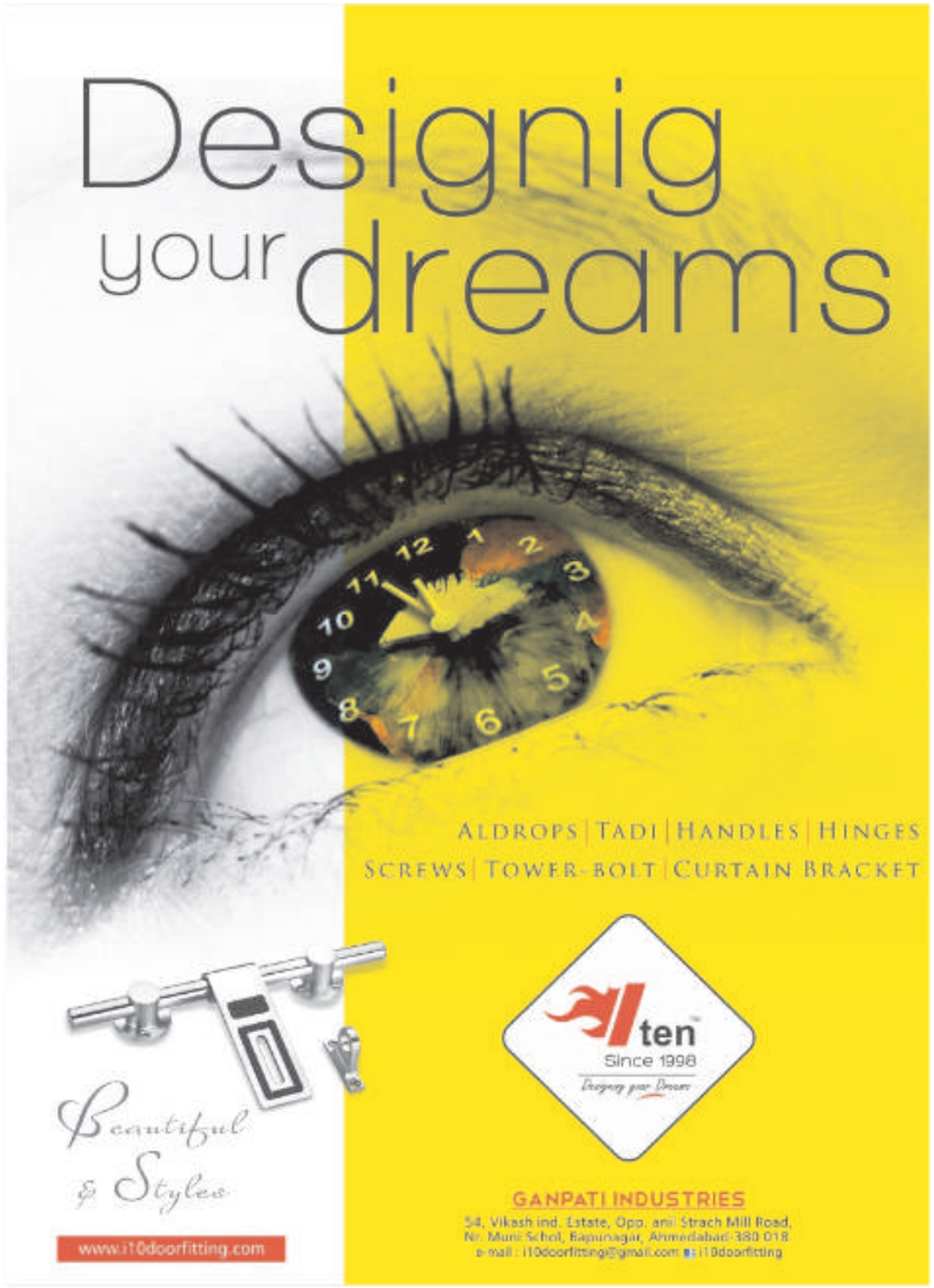

पूछते नहीं?नहीं। पूछकर क्या करना है?जितना बताते हैं उतना सुन लेती हूँ। जितना और जो कहते हैं, कर लेती हूँ।

सच पूछो तो कभी-कभी तो मैं दोनों की तुलना करते हुए स्वयं से पूछती थी कि इन दोनों में महान कौन है?कभी-कभी भाभी का पलड़ा ज्यादा भारी होता था। बिना किसी प्रश्न के अपनी समस्त संवेदनाओं को पति के साथ समाहित करने वाली महिलाएं विरली ही होती है। भाया को पाकर भाभी भाग्यशाली थी पर उससे भी ज्यादा भाभी जैसी गृहलक्ष्मी को पाकर भाया लाख-लाख भाग्यशाली थे।

भाया की एक नहीं सारी जिम्मेदारियों को भाभी ने सहज आत्मसात कर लिया था। उनकी पारिवारिक जिम्मेदारी को भाभी ने कम नहीं संभाला?उनकी ननद ललिता तो कहती भी है- हमारे मां-बाप तो भाया-भाभी है। हाथ भर घूंघट निकाले भाभी ने बहु बनकर आते ही परिवार को जिस ढंग से सम्हाला था, उसी ने भाया के सिर को इतना उन्नत किया था।

इधर भाया का आदेश हुआ और उधर वे मशीन की तरह काम में लग जाती थी। बिना सूचना 10-20 मेहमान घर पर और वह भी पादरू में ही नहीं, मुम्बई में भी ले आना, भाया के लिये रोजमर्रा की घटना थी।

अभी तीन चार वर्षों से भाभी का स्वास्थ्य भी कुछ गड़बड़ाने लगा था और तब भाया ने भी भाभी का पूरा ख्याल रखना शुरू कर लिया था। बल्कि बहुत बार तो भाभी की निष्ठाओं का उल्लेख करते-करते उनकी आँखें बरस पड़ती थी। वे खुद कहते थे- इन्हें पाकर ही मैं अपनी मनमर्जी से सब कुछ कर सका हूँ। अंतिम समय तक भाभी ने भाया का साथ दिया। वे वाकई में छाया बनकर उनके साथ रही, पर जीवन में कभी अकेले कहीं नहीं जाने वाले भाया मृत्यु की ओर अकेले बिना किसी की अनुमति लिये प्रस्थित हो गये।

संघ और समाज में विभिन्न पदों की जिम्मेदारी सम्हालते हुए उन्होंने सेवाएं दी। संगठन के विस्तार में उनका योगदान खूब रहता था। खरतरगच्छ संघ, मुम्बई की स्थापना का उनका सपना था जिसे उन्होंने पू. उपाध्यायश्री के चातुर्मास में पूरा भी किया। खरतरगच्छ संघ, मुम्बई की स्थापना से ही वे उसमें विभिन्न पदों पर सेवा देते रहे। अपनी जन्मभूमि पादरू में भी गच्छ एवं दादावाड़ी के विकास में उनका भरपूर योगदान रहा। खरतरगच्छ संघ, मुम्बई के वे भूतपूर्व अध्यक्ष थे तो पादरू दादावाड़ी ट्रस्ट में वर्तमान अध्यक्ष थे।

संघ और शासन को उनसे अभी खूब अपेक्षा थी। उनकी स्फूर्ति देखकर शायद हमने उनकी उम्र का कभी अनुमान भी नहीं लगाया था। यही मानते रहे कि भाया अभी तो पूर्ण स्वस्थ है पर नियति को हमारे सपने मंजूर न थे। देखते-देखते नियति ने हमारा एक विशिष्ट श्रावक हमसे छीन लिया।

शासनदेव से कामना है सद्गत आत्मा को परम समाधि प्राप्त हो। वह आत्मा आत्मकल्याण करती हुई क्रमशः मुक्ति को प्राप्त हो।

संस्मरण

वात्सल्य पुरुष की अमिट यादें

साध्वी डॉ नीलांजनाश्रीजी म.

ता. 7 जुलाई को घड़ी का कांटा रात के 10 बजने की तैयारी में था और अचानक दीपिका के फोन की घण्टी बजी। फोन मुम्बई से जीजी (पुष्पाजी) का आया था। उन्होंने घबरायी आवाज में समाचार दिये- सोलापुर के पास भाया का एक्सीडेंट हुआ है। यह सुनते ही हृदय धक् से बैठ गया। धड़कन जैसे चलना ही भूल गयी। पूरे शरीर में एक ठण्डी लहर चल गयी। मन आतुर हो उठा भाया की स्वस्थता के समाचार जानने के लिये। उसी समय भाया का नंबर जोड़ा गया। उस नंबर पर भाभी बोल रहे थे... बोल क्या रहे थे... बस रो रहे थे। हम अस्पष्ट शब्दों में उनकी बात सुनते जा रहे थे और रोम-रोम पसीने से, आँखों की कोर पानी से भीगती चली जा रही थी।

हमारे भाया... सबके भाया... जगत भाया..! 'भाया' शब्द कानों से टकराते ही हँसता, मुस्कुराता आँखों से प्रेम की, होंठों से स्नेह की और हृदय से वात्सल्य की बरसात करता एक पारदर्शी व्यक्तित्व आँखों की स्क्रीन पर उतर आया।

खरतरगच्छ के समस्त साधु साध्वी उनको जन्म नाम से कर्म तथा 'भाया' नाम से ज्यादा जानते थे। यह प्यारा, दुलारा, अपनत्व और सम्मानभरा संबोधन उन्हें योंहि नहीं मिला था। उन्होंने संपूर्णता से सब पर जो निर्दोष प्रेम और वात्सल्य लुटाया था, वही तो श्रद्धा और सम्मान के रूप में लौटकर उनके पास आया था।

उस धर्म प्राण आराधक आत्मा की अचानक अकल्पित विदाई की बात सुनकर मन अथाह पीड़ा से भर गया और अतीत की उन गलियों में खो गया, जहाँ पहली बार भाया को देखा था।

1986 में पू. गुरुदेव, पू. माताजी म. सा, पू. बहिन म.सा. आदि का पादरू नगर जो कि भाया की जन्म स्थली थी, में चातुर्मास था। भाया उस समय मुम्बई रहते थे। परन्तु अट्ठाई की तपश्चर्या के साथ संवत्सरी की आराधना करने पादरू आये थे। यह उनके जीवन का नित्य नियम था कि वे पर्युषण कहीं भी करें पर संवत्सरी-प्रतिक्रमण अपने पिताश्री के साथ ही करते थे। पंचमी को पारणा करके मुम्बई प्रस्थान हेतु मांगलिक लेने और दर्शन करने आये। पादरू पाठशाला की सीढ़िया चढ़ते-चढ़ते बुलंद आवाज में 'मत्थएण वंदामि' बोला तो मैं एकदम चौंक गयी। बाद में नया व्यक्ति, अपरिचित किन्तु अपनत्व से भरपूर, निर्भीक किन्तु निर्दंभ, सुव्यवस्थित धवल परिधान, एक भी सल नहीं, एक भी दाग नहीं। ऐसा रौबदार व्यक्ति मैं पहली बार देख रही थी और वे मुस्कुराते हुए उस कक्ष की ओर बढ़ते जा रहे थे जहाँ गुरुवर्याश्री गोचरी कर रहे थे। मैंने रोका भी कि म.सा. गोचरी कर रहे हैं। आप 10 मिनट बिराजे। उन्होंने निखालस भाव से उत्तर दिया...तो हमें भी तो गोचरी करनी है। इतने में तो पू. बहिन म.सा. बाहर पधार गये। उनके वार्त्तालाप से पता चला कि ये तो उन्हीं पूनमचंदजी बासा के इकलौते सुपुत्र है जिनके आग्रह भरे निवेदन को स्वीकार कर गुरुदेव ने यहाँ चातुर्मास किया है।

वह परिचय अपनत्व में और

अपनत्व वात्सल्य में कब रूपांतरित हुआ, पता ही न चला। आज 28 वर्ष बीतने तक उनका गहरा वात्सल्य लगातार एकधार, अनराधार बनकर अंतिम सांस... अंतिम घड़ी... अंतिम मिलन तक सब पर बरसता ही रहा।

अरे! अभी ही तो 6 जुलाई को वे इचलकरंजी प्रवेश पर आये थे। किसने सोचा था, उनका यह आगमन अंतिम है और गुरुदेव से यह मिलन भी अंतिम है। शायद प्रकृति को यह पता था कि भाया कुछ ही दिनों के मेहमान है अत: उसी ने उन्हें प्रवेश से दो दिन पूर्व ही वडगांव में गुरुचरणों में भेज दिया था। ताकि वे इस दुनिया से विदा होने से पहले गुरुदेव का जीभर के आशीर्वाद ले लें। उन्होंने श्रद्धासिक्त भावनाओं से सुपात्र दान दिया। हम सभी ना...ना... करते रहे पर उनकी छलकती भक्ति के सामने हमारे सारे तर्क हार गये। 'भाया' की अनुपमेय भक्ति को देखकर इचलकरंजी वाले, जो वहाँ खडे थे, वे आश्चर्यचकित रह गये। वे सोच रहे थे कि एक व्यक्ति इस हद तक आस्थावान् और भक्त हो सकता है। और उस दिन 'भाया' ने हम संतों की भक्ति के साथ-साथ साधर्मिक भक्ति का भी पूरा लाभ उठाया। जीभर के उनकी भक्ति की।

पू. उपाध्यायश्री के प्रति उनकी भक्ति और निष्ठा अत्यन्त अद्भुत थी। गुरुदेव की हर बात, हर आज्ञा उनके लिये पत्थर की लकीर थी। गुरुदेव की निश्रा में कोई भी आयोजन अथवा कार्यक्रम हो, वे अपनी देवी स्वरूपा, छाया की भाँति प्रतिक्षण साथ-साथ चलने वाली धर्मपत्नी भवानीदेवी के साथ पूज्यवर के ऊर्जामय सान्निध्य में उपस्थित हो जाते। प्रतिदिन प्रभु पूजा के पश्चात् वे गुरुदेव की नवांगी पूजा करते, तब कहीं जाकर मुंह में पानी डालते। वे गुरुदेव के प्रति ही नहीं, गुरुदेव के भक्तों के प्रति भी अत्यन्त वात्सल्य और माधुर्य से परिपूर्ण हृदय वाले थे। नये-नये श्रावकों को वे गुरुदेव से जोडते और आनंद प्राप्त करते। गुरुदेव के प्रति जहाँ श्रद्धा और सम्मान था, वहीं छोटे-छोटे साधु साध्वियों के प्रति उनके हृदय में अपार वात्सल्य और बहुमान था। संयमी जीवन में पौष्टिक और उच्च गुणवत्ता वाला द्रव्य आग्रह करके भावपूर्वक वहोराने की उनमें अनूठी कला थी। उनकी भावनाओं में इतना माधुर्य टपकता था कि उनके द्वारा दिया गया आहार स्वयं अमृतमय बन जाता था।

गुरुभक्ति के साथ उनकी प्रभुभक्ति भी अनुकरणीय और आदर्श थी। प्रात: 4 बजे उठकर सामायिक, प्रतिक्रमण आदि सम्पन्न होते ही पूजा के वस्त्रों में वे जिनालय पहुँच जाते। प्रक्षाल, अंगलूंछणा से लेकर स्नात्र पूजा एवं अष्टप्रकारी पूजा करने के बाद ही उनके दैनिक कार्यक्रम प्रारम्भ होते थे। उनके रहन-सहन, खान-पान में जितनी सम्पन्नता नजर आती थी, उससे भी कई गुणा भावनाओं का वैभव उनकी परमात्म भक्ति में टपकता था।

प्रभु भक्ति उनका जीवन था तो प्रभु आज्ञा उनकी सांसें। जिनाज्ञा रूप प्राण की रक्षा उन्होंने अपने प्राणों की परवाह किये बिना भी की। जब प्राण संकट में थे, तब भी जिज्ञासा ही स्मरण में थी। पिछले कई वर्षों से वर्षीतप की उग्र तपश्चर्या गतिमान थी। उपवास के पारणे में भी बियासणा ही होता था। यदि बीच में कोई बड़ी पर्वतिथि आ जाय तो बेला, तेला भी हो जाता। उस तपश्चर्या में भी उतने ही स्फूर्त,

तरोताजा और तेजस्वी नजर आते थे। कायबल क्षीण होने पर भी आत्मबल कभी क्षीण तो क्या, मन्द भी नजर नहीं आया।

सड़क दुर्घटना के दिन भी उनके उपवास था। आई. सी.यू. में एडमिट होने पर भी उन्होंने मुँह से कुछ भी नहीं लिया। दूसरे दिन भी सात बजते ही पानी की बोटल बाहर भिजवाने का संकेत करते हुए स्पष्टतया यह आदेश दिया कि मुझे रात्रि में कोई भी दवा, गोली मुंह से देने की जिद्द न करें। कैसी अलबेली थी उनकी जिनाज्ञा रूप तपनिष्ठा और व्रतनिष्ठा। निश्चय ही ऐसी विशुद्ध जिनाज्ञा की आराधना तो कोई महान् और निकटमोक्षगामी आत्मा ही कर सकता है।

उनका शासन अनुराग के साथ गच्छ के प्रति समर्पण भी गजब का था। मुम्बई में पू. उपाध्याय श्री की प्रेरणा से खरतरगच्छ संघ की स्थापना होने के बाद सतत उनका यह प्रयास रहा कि गच्छ का हर व्यक्ति इस संघ से जुड़े और यह तभी संभव था जब प्रतिवर्ष चातुर्मास हो।

उसके बाद मुम्बई खरतरगच्छ संघ में जब भी चातुर्मास हुआ, भाया ने तन-मन-धन की पूरी उदारता से अपनी सेवाएँ प्रदान की।

सन् 2006 में मेरे जीवन का प्रथम स्वतंत्र चातुर्मास मुम्बई में होना भाया की उत्कट अभिलाषा का परिणाम था। उन्होंने पू. बहिन म. से आग्रह ही नहीं अधिकारपूर्वक निवेदित किया था कि अगर गच्छ का विकास करना है तो किसी भी साध्वीजी का चातुर्मास आपको देना ही पड़ेगा। तब भाया की इच्छा और आदेश का मान रखते हुए गुरुवर्याश्री ने मुझे मुम्बई भेजा था। चूंकि उनके आदेश से ही यह चातुर्मास मिला था अत: इसे प्रत्येक अपेक्षा से सफल और स्मरणीय बनाने में भाया ने जहाँ हर संभव प्रयास किया था, वहीं मेरे एकाकी मन और अकेलेपन को बांटने का काम भी भाया ने ही किया था। भगवान महावीर के 'अम्मापिऊणो' संबोधन को उन्होंने वास्तविक अर्थ में जीया था, तभी तो वे समस्त संयमी आत्माओं में पुत्र-पुत्री का दर्शन कर असीम वात्सल्य छलकाते थे। माता-पिता की भूमिका में जहाँ आत्मीयता और ममता रखते, वहीं श्रावक के भूमिका में वे संयमियों का उतना ही विनय और आदर रखते हुए विधिपूर्वक वंदना भी करते।

जप, तप, क्रिया, आराधना, भक्ति, उदारता और कर्मठता की जीवन्तमूर्ति होने पर भी अभिमान उन्हें लेशमात्र भी छू नहीं पाया था। आचरण में सहजता, विचारों में ऋजुता, व्यवहार में नम्रता, वाणी में मधुरता, भावों में कोमलता और हृदय में वत्सलता, यह भाया के व्यक्तित्व के अनोखे गुण थे, जो उनके भीतर रही हुई एक विशिष्ट आत्मा के दर्शन करवाते थे।

भाया ने अपने जीवन में गुणों की जिस ऊँचाई का स्पर्श किया था, उसकी मजबूत नींव थी- उनकी अनुगामिनी धर्मशीला भवानीदेवी, उनकी हर इच्छा, हर आज्ञा और हर क्रिया में उनका सर्वतोभावेन साथ दिया। कहना यों चाहिये कि धर्मपत्नि के त्याग और समर्पण ने ही भाया के जीवन को इतना महान् और विशिष्ट बनाया।

भाया तो बस भाया ही थे उन पर जितना भी लिखे, अधूरा ही होगा क्योंकि गुणों का सौंदर्य और भावनाओं की खुश्बू तो असीम है जिन्हें शब्दों की सीमाओं में समेट पाना मुमकिन नहीं।

आज हमने भाया के रूप में एक विशुद्ध आराधक गच्छनिष्ठ श्रावकरत्न ही नहीं खोया बल्कि एक आधार स्तंभ, प्रकाश स्तंभ के रूप में वात्सल्य चेता महान् पुरूष खोया है। यदि क्षति केवल परिवार, संघ और समाज की नहीं अपितु संपूर्ण गच्छ और समग्र जिनशासन की क्षति है।

भाया हमसे देह से भले ही दूर चले गये हैं परन्तु वे अपने कार्यकलापों से हमारी स्मृतियों में हृदय की गहराईयों में सदैव अमिट व्यक्तित्व के रूप में जीवित रहेंगे। उनके गुणों की सुगंध हमारे शासन और संघ को सदैव महकाती रहेगी। वे जहाँ भी हो, उनकी आत्मा को शांति मिले और आत्म-विकास के सोपान तय करते हुए अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करें... यही एकमात्र भावांजलि है..

संघ की बड़ी क्षति

– मुनि मनिषप्रभसागरजी म.सा.

धर्मप्रेमी और सच्चे आराधक पादरु निवासी संघवी श्रीमान पुखराज जी छाजेड़ का अचानक स्वर्गवास हमारे धर्म संघ की बहुत बडी क्षति है।

उनकी जन्मभूमि में मेरी भागवती दीक्षा हुई। दीक्षा के समय वे मेरे धर्म के माता पिता बने। उन्होंने जीवन भर यह रिश्ता निभाया। वे जब भी मेरे पास आते, वात्सल्य भी बरसाते और हित शिक्षा भी देते। वे सच्चे अर्थ में मेरे माता पिता थे। उनके स्वर्गवास से शासन, संघ, समुदाय व गच्छ को अपूरणीय क्षति हुई है। मेरी ओर से उस महान् त्यागी तपस्वी आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

हर कार्य में अग्रणी : पुखराजजी

– कैलाश बी.संकलेचा, चैन्नई

हमारे वेवोइसा श्रावक रत्न श्रीमान् पुखराजजी छाजेड़ की अकल्पित विदाई से जिनशासन ने एक अनमोल हीरा खो दिया है।

आप पादरू दादावाडी के अध्यक्ष थे और पादरू गाँव के हर कार्य में आप अग्रणी थे। आप वैयावच्च में अग्रणी थे और सभी गुरू भगवन्तों के प्रति समर्पित थे।

मैं अरिहंत प्रभु और दादा गुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्री पुखराजजी छाजेड़ हमारे परिवार की ओर से हार्दिक श्रदांजलि समर्पित है...

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित
श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित
श्री जिनकुशल हेम विहारधाम
जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।
निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार
संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

पर्युषण विशेष

राष्ट्रीय प्रतीक बनाम छद्म धर्मनिरपेक्षता

-खुशालचंदसी.बागरेचा

देश के प्रतीकों से स्वयं को जोड़ना क्या सांप्रदायिकता है?बिल्कुल नहीं। किन्तु साम्प्रदायिकता के आरोपों से बचने के लिए हम अपने ही प्रतीकों का मखौल उड़ाकर आजादी की अड़सठवी साल गिरह पर भी यह प्रश्न पैदा करते रहे है कि क्या पूरे कर पाएंगे हम आजादी के सौ साल?

हमारे धार्मिक प्रतीक हमारे जीवन से किस तरह जुड़कर राष्ट्रीयता की भावना को मजबूती प्रदान कर रहे है उसके कुछ ही उदाहरण हमें गौरवान्वित करने के लिए पर्याप्त है जैसे- दक्षिण भारत विशेषकर केरल नारीयल से पटा पड़ा है। नारीयल वहाँ हर काम में, हर सांस में बसा है, क्योंकि यह फल हमारे शरीर का पोषण करता है। इसलिए पवित्र है एवं जो पवित्र है वह पूज्य है, वह शुभ है। जो शुभ है उसी से प्रत्येक कार्य शुरू करने की प्रथा दक्षिण भारत से प्रारम्भ हुई जिसे अखण्ड भारत ने सदियों पहले अपना लिया। आज हमें बताया जा रहा है कि यह शुभारम्भ करने का तरीका साम्प्रदायिक है।

सारे कर्नाटक में चंदन बसा है। माथे पर लगाओ तो शीतलता याने गर्मी से राहत मिलती है। इसलिए सारे भारत में प्रकृति के इस वरदान को धर्म के रूप में अपना लिया। पर छद्म धर्मनिरपेक्षता का बवाल देखो कि उसको भी याने तिलक व बिंदिया को भी अब सांप्रदायिकता की निशानी बताकर बरगलाया जा रहा है।

सारा देश चावल खाता है जो खाया जाता है वही उपजाया जाता है और यही हमारे लिए परम आवश्यक है व पूज्य है। इसलिए हम इसे अपने आराध्य को पूजा के रूप में चढ़ाते है। लेकिन यह चावलों द्वारा की जाने वाली पूजा, धर्म निरपेक्षों के सर्टिफिकेट की मोहताज हो गई।

गंगा पूजनीय है क्योंकि पानी ही जीवन है इसलिए हर नदी गंगा है। वृक्ष पूज्यनीय है क्योंकि वे ऑक्सीजन देकर हमें प्राण देते है। धरती पूज्यनीय है क्योंकि यह हमें धारण कर अनाज व सभी कुछ देती है। हम यज्ञ की आहुति के द्वारा हवा को पूजते है क्योंकि हमारी साँस हवा से ही चलती हैं। आग भी पूजनीय है क्योंकि प्रदुषण करने वाली हर चीज को भस्म करके फिर उपजाऊ खाद बना देती है।

पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, अग्नि इन पंचमहाभूतों की पूजा के जरिए हमने विश्व को यह संदेश देने की कोशिश की हैं कि इन्हें साफ व पवित्र रखा जाए। लेकिन इसे भी साम्प्रदायिक कहकर प्रदुषण को बेरोकटोक फैलने देकर देश का लगभग गला ही घोंट डाला है।

धर्म हमारे लिए जीवन है। नारियल, चंदन, अक्षत, मां सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, राम, कृष्ण, महावीर, शिव, गंगा, हिमालय आदि हमारी श्वास है, हृदय है, धड़कन है, रक्त प्रवाह है। पर इन धर्म निरपेक्षों से कौन कहे?उन्हे सिर्फ वही पसंद है जो वोट बैंक को पंसद है। पर वोट बैंक के विद्वान धर्मवक्ताओं ने तो ऐसी शर्त कभी नहीं रखी। उनके स्वयंभू प्रवक्ता बने ये धर्मनिरपेक्ष बाजीगर उन्हें भी बदनाम ही कर रहे है। कभी मुसलमानों का नाम लेकर धर्मनिरपेक्ष मल्ल योद्धाओ ने वंदे मातरम् राष्ट्रीय गीत पर आपत्ति की थी। पर जब ए.आर.रहमान ने वंदे मारतम् का नया संगीतमय संस्करण 'मां तुझे सलाम' तैयार किया और सारे देश ने उसे हाथों हाथ उठा लिया तो इन छद्म धर्मनिरपेक्ष मानसिकता वाले लोगों के हाथों के तोते उड़ गए।

आप वेद, उपनिषद्, पुराण का नाम मत लीजिए। राम, कृष्ण, शिव, महावीर, बुद्ध का नाम जुबान पर मत लाइये। मां सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा आदि के कला के नाम पर नंगे चित्र बनाइये। नानक, कबीर, रैदास, मीरा को दिल से निकाल दीजिए। गुरु ग्रंथ साहब को पढ़ना बंद कर दीजिए। गुरु गोविंद सिंह, राणाप्रताप, वीर शिवाजी को भूल जाइये। स्वामी विवेकानंद, दयानंद, संत तुकाराम, ज्ञानदेव के नामों पर खड़िया पोत दीजिए। अपने राष्ट्र के इन महान प्रतीकों को नष्ट कर डालिए। अपना सारा साहित्य समुद्र में डूबो दीजिए। अपनी परम्पराओं पर हंसिये। इतना सब करो तो धर्म निरपेक्ष। और इतना सब न करो तो सांप्रदायिक होने का आरोप-हिन्दुत्व लाने का आरोप।

जैसे जापान के जापानी, बांग्लादेश के बांग्लादेशी, पाकिस्तान के पाकिस्तानी वैसे ही हिन्दुस्तान के सभी हिन्दु ही हुए ना। पर डरिए मत क्योंकि अपने देश का दर्शन भगवान महावीर स्वामी के अनेकांतवाद की जिस मजबूत नींव पर टिका है। वह इस देश को हमेशा आकाश की तरह ऊँचा, विराट सागर की तरह गहरा व हिमालय की तरह अडग, अचल बनाए रखेगा।

पर्युषण महिमा

जैन धर्म में सबसे उत्तम पर्व है 'पर्युषण'। यह सभी पर्वों का राजा है। इसे आत्मशोधन का पर्व भी कहा जाता है जिसमें तपकर कर्मों की निर्जरा कर अपनी आत्मा को निर्मल बनाया जाता है।

पर्युषण पर्व को आध्यात्मिक दिवाली की भी संज्ञा दी गयी है। जिस तरह दिवाली पर व्यापारी अपने सम्पूर्ण वर्ष का आय-व्यय का पूरा हिसाब करते हैं। गृहस्थ अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं। ठीक उसी तरह पर्युषण पर्व में वर्ष-भर के पुण्य-पाप का पूरा हिसाब करते हैं। आत्मा पर लगे कर्म रूपी मल की साफ-सफाई करते है।

पर्युषण पर्व, आत्म जागरण का संदेश देता है। सोई हुई आत्मा को जगाता है।

दुनिया में पर्युषण ही ऐसा पर्व है जो हाथ मिलाने और गले लगाने का नहीं, बल्कि पैरों में झुक कर माँफी माँगने की प्रेरणा देता है। आइए! इस क्षमा पर्व का लाभ उठाए। सभी से हाथ जोड़कर क्षमा मांगें।

-मुमुक्षु शुभम् लुंकड़

(शेष पृष्ठ 44 का) ऐसे थे मेरे गुरुदेव

भी बोलचाल हुई, उन सब के लिये मैं क्षमापना करता हूँ।

पूज्यश्री ने फरमाया- आपने अपनी जिद्द छोड कर जो उदारता दर्शायी है, नम्रता धारण कर झगडे को मिटाया है, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। आपके भावों की अनुमोदना है। आपने अपने कुल, शासन, संघ व गांव की शान बढाई है।

सकल संघ में अनूठा उत्साह छा गया। आँखों से अश्रु बह चले। सरपंच लुम्बारामजी ने कहा- वज्र के समान हृदय भी आज पूज्यश्री की वाणी से पिघल कर अमृत बन गया है।

छत्री पर अपना फैसला सुनाते हुए पूज्यश्री ने कहा- श्मसान भूमि पर छत्री बनाने का कोई अर्थ नहीं है। प्रतिमा मंदिरजी में ही उचित स्थान पर बिराजमान की जावे। इस निर्णय को सकल संघ ने तुमुल घोष से बधाया।

और उसी समय एक श्रावक ने गीत बनाकर घर घर बांटा-

धडे मिटाने वाले गुरु की जय जय जय हो! संप कराने वाले गुरु की जय जय जय हो!

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. अपने साथी मुनि पूज्य श्री दर्शनसागरजी म.सा. के साथ सन् 1962 का चातुर्मास संपन्न कर फलोदी पधारे थे। वहाँ आगम ज्योति श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. को विधि विधान से प्रवर्तिनी पद प्रदान करके खींचन पधारे थे। वहाँ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर लोहावट पधारे।

लोहावट उस समय झगडे की आग में झुलस रहा था। सात वर्षों से धडे पडे हुए थे।

इन सात वर्षों में आसपास के कितने ही प्रतिष्ठित व्यक्ति वहाँ पहुँचे थे और उन्होंने समस्या का समाधान करने का पुरूषार्थ किया था। परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई थी।

पूज्यश्री ने लोहावट प्रवेश के साथ ही घोषणा कर दी कि झगडे समाप्त करने ही होंगे। उन्होंने समाधान का प्रयत्न प्रारंभ किया। दोनों पक्षों के प्रमुखों के साथ मीटींग की। समझाना प्रारंभ किया।

यह पूज्यश्री का प्रभाव था कि तीसरे ही दिन दादावाडी में आम सभा का आयोजन किया, जिसमें सकल संघ उपस्थित हुआ। गाँव के सरपंच श्री लुम्बारामजी आदि भी उपस्थित थे।

उस सभा में पूज्यश्री ने घंटे भर क्षमा और उदारता की व्याख्या करते हुए प्रभावशाली प्रवचन दिया। पूज्यश्री ने कहा- हमारा ओसवाल समाज बौद्धिकता से परिपूर्ण समाज है। हर क्षेत्र में हमारा समाज आगे है। बस! एकता की कमी है। एक और एक मिल जाये तो ग्यारह हो जाते हैं। हम महाजन कहलाते हैं। हम अन्यों के विवाद मिटाने के लिये प्रसिद्ध हैं। और यदि हम ही आपस में छोटी छोटी बातों के लिये लडते झगडते हैं, तो क्या संदेश जाता हैं। दूसरे लोग हमारी मजाक उडाते हैं। हम हंसी का पात्र बन जाते हैं।

पूज्यश्री का यह प्रभावशाली असरकारक प्रवचन पूरा हुआ ही था कि उसी समय श्री कंवरलालजी पारख ने खडे होकर कहा- मैं पूज्यश्री के आदेश को शिरोधार्य करता हुआ आज से सारे विवादों को समाप्त करता हूँ। यह विवाद सात नहीं अपितु सत्तर वर्षों तक भी चलता रहे, तो भी दोनों पक्षों का कुछ भी नहीं बिगडना है। परन्तु हमारे समाज की क्या दशा होगी! धर्म और शासन का द्रोह होगा। धर्म की अपार हानि होती है। पूज्यश्री के उपदेशों से हम गांव में एकता स्थापित करते हैं। और मेरी पार्टी के जितने भी प्रस्ताव थे, उन सभी को बिना शर्त मैं वापस लेता हूँ। बोली की रकम जमा हो, न हो व छत्री बने, न बने यह सब संघ के निर्णय अधीन हैं। हमें अब किसी भी प्रकार का कोई एतराज नहीं होगा।

हमारे पास जो भी संपत्तियों की चाबियाँ हैं, वह सब हम आज पूज्यश्री के समक्ष संघ को सुपुर्द करते हैं। इन वर्षों में इस विवाद के दौरान जो

(शेष पृष्ठ 43 पर)

संस्मरण

29

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

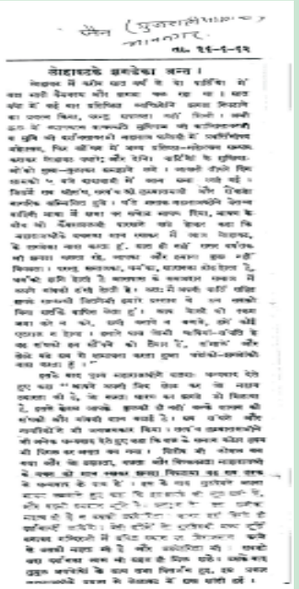

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

तत्त्वावबोध

11

चतुर्भंगी का चमत्कार

श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

७३ स्त्री-पुरुष-राग

1. स्त्री-पुरुष, दोनों में परस्पर राग- ब्रह्मदत्त चक्री एवं श्रीदेवी
2. स्त्री-पुरुष, दोनों में परस्पर विराग- विजय सेठ एवं विजया सेठानी
3. स्त्री में राग, पुरुष में विराग- रेवती एवं महाशतक
4. स्त्री में विराग, पुरुष में राग- राजीमती और रथनेमि

७४ गुरु-शिष्य

1. सुगुरु और सुशिष्य- जिनदत्तसूरि एवं मणिधारी जिनचन्द्रसूरि
2. सुगुरु और कुशिष्य- कुलवालुक मुनि और उनके गुरु
3. कुगुरु और सुशिष्य- अंगारमर्दकाचार्य और उनके शिष्य
4. कुगुरु और कुशिष्य- गोशालक और उनके शिष्य

७५ द्रव्य-भाव-चारित्र

1. द्रव्य चारित्र पर भाव चारित्र नहीं- अंगारमर्दकाचार्य
2. भाव चारित्र पर द्रव्य चारित्र नहीं- मरूदेवी माता
3. द्रव्य चारित्र और भाव चारित्र- गौतम गणधर
4. द्रव्य और भाव चारित्र, दोनों नहीं- ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती

७६ समता और उपसर्ग

1. समता और उपसर्ग, दोनों है- अवन्ति सुकुमाल
2. समता और उपसर्ग, दोनों नहीं है- अजीव
3. समता है पर उपसर्ग नहीं है- अनुत्तर वैमानिक देव
4. उपसर्ग है पर समता नहीं है- खंदक मुनि

७७ जन्म-पालन

1. नीच कुल में जन्म, उच्च कुल में पालन- मेतारज मुनि
2. नीच कुल में जन्म, नीच कुल में पालन- हरिकेशबल मुनि
3. उच्च कुल में जन्म, नीच कुल में पालन- राजा करकण्डू
4. उच्च कुल में जन्म, उच्च कुल में पालन- प्रसन्नचन्द राजर्षि

७८ प्रेम-दृढ़ता

1. जिनधर्म से प्रेम एवं दृढ़ता दोनों- गौतम गणधर
2. जिनधर्म से प्रेम पर दृढ़ता नहीं- नन्दमणियार
3. जिनधर्म में दृढ़ता पर प्रेम नहीं- सुकुमालिका
4. जिनधर्म से प्रेम व दृढ़ता, दोनों नहीं- मम्मण सेठ

७९ पति-पत्नी

1. पति-पत्नी, दोनों उत्तम- जम्बुकुमार एवं उनकी आठ पत्नियाँ
2. पति-पत्नी, दोनों अधम- ब्रह्मदत्त चक्री और स्त्री रत्न
3. पति अधम, पत्नी उत्तम- रावण और मन्दोदरी
4. पति उत्तम, पत्नी अधम- इषुकार राजा और सूर्यकान्ता रानी

मुनि मनितप्रभसागरजीम.सा.

पंचांग

SEPT. 2014

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1 भाद्रपद सुदि 7	2 भाद्रपद सुदि 8	3 भाद्रपद सुदि 9	4 भाद्रपद सुदि 10	5 भाद्रपद सुदि 11	6 भाद्रपद सुदि 12
7 भाद्रपद सुदि 13	8 भाद्रपद सुदि 14	9 भाद्रपद सुदि 15/1	10 आश्विन वदि 2	11 आश्विन वदि 3	12 आश्विन वदि 4	13 आश्विन वदि 5
14 आश्विन वदि 6	15 आश्विन वदि 7	16 आश्विन वदि 8	17 आश्विन वदि 9	18 आश्विन वदि 10	19 आश्विन वदि 11	20 आश्विन वदि 12
21 आश्विन वदि 13	22 आश्विन वदि 13	23 आश्विन वदि 14	24 आश्विन वदि 30	25 आश्विन सुदि 1	26 आश्विन सुदि 1	27 आश्विन सुदि 2
28 आश्विन सुदि 3	29 आश्विन सुदि 4	30 आश्विन सुदि 5				

पर्व दिवस

श्री नेमिनाथ केवलज्ञान कल्याणक आसोज वदि अमावस	
नवपद ओली प्रारंभ आसोज सुदि 6	08.09.14 पाक्षिक प्रतिक्रमण
023.09.14 पाक्षिक प्रतिक्रमण	आसोज वदि 1 क्षय
आसोज वदि 13 की वृद्धि	रोहिणी 15-09-14

हार्दिक श्रद्धांजली

जिनशासन के रत्न, गच्छ के गौरव,
जीवदया प्रेमी परम गुरू भक्त, सरल स्वभावी

स्व. संघवी पुखराजजी छाजेड़

(पादरु)

को भावभीनी हार्दिक श्रद्धांजली

श्री एस. कम्प्युटर सेन्टर, जोधपुर

आचार्य बप्पभट्टिसूरि स्वर्गवास	भाद्रपद सुदि 8 - 0895
श्री सुविधिनाथ मोक्ष कल्याणक	भाद्रपद सुदि 9
श्री सुविधिनाथ मोक्ष कल्याणक	भाद्रपद सुदि 9
अकबर प्रतिबोधक दादा श्री जिनचन्द्रसूरि आचार्य पदारोहण	भाद्रपद सुदि 9 - 1612
चतुर्थ दादा श्री जिनचन्द्रसूरि स्वर्गवास दिवस	आसोज वदि 2 - 1670
आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि द्वितीय स्वर्गवास दिवस	आसोज वदि 2 - 1331
आचार्य श्री जिनलाभसूरि स्वर्गवास दिवस	आसोज वदि 10 - 1834
श्री महावीर स्वामी गर्भापहार कल्याणक	आसोज वदि 13

समाचार दर्शन

इचलकरंजी में चातुर्मास हेतु प्रवेश संपन्न

पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 7 एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया बहिन म.डॉ.श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. ठाणा 4 का चातुर्मास हेतु इचलकरंजी नगर में मंगल प्रवेश ता. 6 जुलाई 2014 रविवार को संपन्न हुआ।

पूज्यश्री के प्रवेश समारोह में हुबली श्री दादावाडी संघ के तत्वावधान में बहुत बडी संख्या में श्रावक श्राविकाऐं पधारे थे। साथ ही गंगावती, गदग, सांगली, डुठारिया, मुंबई, पूणे, सांचोर, बैंगलोर, बाडमेर, सूरत, नवसारी, देपालपुर, उज्जैन, आदि क्षेत्रों के बडी संख्या में श्रावक पधारे थे।

लगभग 1 हजार यात्री बाहर से पधारे थे। शोभायात्रा का प्रारंभ कापड मार्केट हाउसिंग सोसायटी से हुआ जो इचलकरंजी के प्रमुख सारे बाजारों व राजस्थान भवन होती हुई मणिधारी भवन पहुँची। शोभायात्रा की यह विशेषता रही कि इसमें मंदिरमार्गी, स्थानकवासी, तेरापंथी, दिगम्बर आदि समस्त समाजों के लोग बडी संख्या में सम्मिलित हुए। वरघोडे में चारों ओर जन सैलाब नजर आ रहा था। सामैया कलश वर्धापना का लाभ श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड हरसाणी वालों ने लिया था। गहुँली का लाभ सिवाना निवासी श्री सुमेरमलजी उगमराजजी ललवानी परिवार ने लिया था।

जिन मंदिर एवं दादावाडी के दर्शन के पश्चात् सकल संघ के साथ पूज्यश्री सुखसागर प्रवचन मंडप में पहुँचे, जिसका उद्घाटन लाभार्थी परिवार श्री दीपचंदजी नेमीचंदजी रमेशकुमारजी भंसाली समदडी वालों ने किया। अभिनंदन सभा का प्रारंभ हुआ। समारोह का संचालन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया। उन्होंने संचालन करते हुए चातुर्मास की महिमा, कर्त्तव्य पर प्रकाश डाला।

पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा- कितना अच्छा होता कि पूजनीया माताजी म. व बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी का चातुर्मास भी यहीं साथ होता। और साथ ही था, पर अचानक योग ऐसा हो गया कि उनका चातुर्मास नंदुरबार कराना पडा। सांसारिक अपेक्षा से आज पूरा लूंकड परिवार यहाँ उपस्थित है, पूजनीया माताजी म. व बहिन म. यहाँ नहीं है।

उन्होंने चातुर्मास की व्याख्या करते हुए अपने स्वभाव को बदलने की प्रेरणा दी।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. ने रूंधे कण्ठ के साथ अपनी गुरुवर्या का स्मरण करते हुए कहा– उनकी यहाँ अनुपस्थिति प्रतिक्षण खटकेगी। सभा का प्रारंभिक संचालन करते हुए संघ सचिव रमेश लूंकड ने अपने भाव व्यक्त करते हुए इस चातुर्मास को ऐतिहासिक बनाने का आह्वान किया। उन्होंने इस बात के लिये संघ का आभार जताया कि इस चातुर्मास में संपूर्ण साधर्मिक भक्ति का लाभ हमारे परिवार को प्राप्त हुआ है। पूज्यश्री को कामली बहोराने का लाभ श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड, श्री भंवरलालजी विरधीचंदजी छाजेड परिवार ने लिया। जबकि गुरुपूजन का लाभ चितलवाना निवासी संघवी शा. दलीचंदजी मिश्रीमलजी मावाजी मरडिया परिवार ने लिया।

इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा लिखित सुवास वाटिका पुस्तक का विमोचन मोकलसर निवासी श्री बाबुलालजी तेजराजजी प्रकाशकुमारजी गौतमकुमारजी लूंकड परिवार द्वारा किया गया। दूसरी पुस्तक माइण्ड मेनेजमेन्ट का विमोचन बाडमेर निवासी श्री संपतराजजी माणकमलजी संखलेचा परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर चातुर्मास समिति के संयोजक श्री माणकचंदजी ललवानी, दादावाडी अध्यक्ष श्री पुखराजजी ललवानी, उपाध्यक्ष श्री गौतमचंदजी वडेरा, मंथन लूंकड, संपतराजजी संखलेचा, कवितादेवी ललवानी, दिव्या बोथरा, दुर्गादेवी मेहता आदि ने अपने भाव सुमन प्रकट किये। अंत में आभार सुमेरमलजी ललवानी ने प्रकट किया।

चातुर्मास की आराधना का अनूठा रंग

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 का इचलकरंजी नगर में प्रभावशाली चातुर्मास चल रहा है। प्रवेश समारोह के पश्चात् ता. 8 जुलाई को दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी म. की पुण्यतिथि का आयोजन किया गया।

ता. 12 जुलाई को मंत्र दीक्षा का अनूठा कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस बीच चिंतामणि तप का आयोजन हुआ, जिसमें 108 तपस्वियों ने भाग लिया। हर शनिवार को प्रश्नोत्तरी प्रवचन होता है। हर रविवार को जीवन और परिवार से संबंधित विशेष प्रवचन पूज्यश्री फरमाते हैं। पूज्यश्री के प्रभावशाली प्रवचन श्रवण करने के लिये मंदिरमार्गी, दिगम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी, माहेश्वरी आदि बडी संख्या में पधारते हैं।

ता. 24 जुलाई को बैंगलोर बसवनगुडी खरतरगच्छ संघ पूज्यश्री की सेवा में पहुँचा। संघ की ओर से आगामी चातुर्मास हेतु पूज्यश्री से भावभरी विनंती की।

ता. 25 जुलाई से वीशस्थानक तप का प्रारंभ हुआ है। जिसमें 100 से अधिक तपस्वी तपस्या कर रहे हैं। सिद्धि तप की महान् तपस्या भी चल रही है।

प्रतिदिन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. के संचालनत्व में शिविर चल रहा है। जिसमें 70 से 80 लोग प्रतिदिन तत्त्वज्ञान आदि विभिन्न विषयों का अध्ययन होता है।

रविवार को दोपहर ढाई से चार बजे तक विशेष शिविर पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. लेते हैं, जिसमें 250 से अधिक शिविरार्थी जीवन निर्माण की कला का अध्ययन कर रहे हैं। इसी प्रकार प्रतिदिन प्रवचन के पश्चात् प्रतिक्रमण अर्थ की कक्षा पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. लेते हैं। रविवार को दोपहर ढाई से चार बजे तक बच्चों का शिविर पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. लेते हैं। इस प्रकार धर्म ध्यान आराधना साधना स्वाध्याय के साथ चातुर्मास चल रहा है।

समाचार दर्शन

चौहटन में चातुर्मास प्रवेश सानन्द सम्पन्न

दिनांक 07 जुलाई 2014 चार्तुमासिक प्रवेश हेतु पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. और पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. का धर्मधरा चौहटन नगरी में गाजे बाजे के साथ आगमन हुआ। मुनियों के दर्शनार्थ प्रवेश समारोह में धर्मावलम्बियों का हुजूम उमड़ पड़ा।

बैण्ड की मधुर लहरियों के बीच, मंगल कलश लिए महिलाएँ, बालिकाएँ, जैन पताकाएँ, फहराते हुए युवा मण्डल, बुजुर्ग इत्यादि सभी लोग गाते-बजाते, डाडियाँ रास खेलते प्रवेश समारोह की शोभा बढा रहे थे।

वरघोड़ा कस्बे के मुख्य मार्गों से शान्तिनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर, जिनकुशलसूरि दादावाड़ी से गुजरता हुआ शान्तिनाथ सभा भवन पहुँचा जहाँ धर्मसभा में तब्दील हुआ। धर्मसभा को एडवोकेट जैठमल जैन बाड़मेर, आसूलाल धारीवाल, डॉ मोहनलाल डोसी, सोहनलाल डोसी, कोमल धारीवाल ने सम्बोधित किया। कुशल हेम महिला मंडल एवं बालिका मंडल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। शंकरलाल धारीवाल परिवार बाड़मेर द्वारा चार्तुमासिक ध्वज फहराया गया।

मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. व मनीषप्रभसागरजी म. ने चार्तुमास के महत्व की जानकारी देते हुए सभी को जप-तप-आराधना एवं स्वाध्याय में जुड़े रह कर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करने का उपदेश दिया। उन्होंने नित्य प्रतिदिन मंदिर में देवदर्शन, पूजा, प्रतिक्रमण, सामायिक, संस्कार शिविरों में जुड़ कर मानव जीवन के अमूल्य समय का सदुपयोग कर जिनशासन की सेवा करने का आह्वान किया। अंत में श्री हीरालाल धारीवाल द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। संघ की तरफ से प्रभावना रखी गई। कार्यक्रम का सफल संचालन गौतम भंसाली द्वारा किया गया।

दादा गुरुदेव को याद किया

बेंगलोर में

दिनांक 8.7.2014 को प.पू. गुरुवर्या श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की निश्रा में प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म.सा. की 860 वीं पुण्यतिथि पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन संघ के अध्यक्ष श्रीमान् महेन्द्रजी रांका, चुन्नीलालजी गुलेच्छा एवं रमनजी पारख ने किया। राजेन्द्रजी गुलेच्छा एवं रमनजी पारख ने गुरु भक्ति गीत गाया।

प.पू. श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ने कहा कि गुरुदेव ने अपनी साधना उपासना आराधना से, अपने गुणों की महक से, ज्ञान की ज्योति से शासन को चमकाया। परमात्मा के शासन में आपने 1200 दीक्षाऐं एक साथ, एक ही दिन में करवायी। उनके तपोबल से दाह संस्कार के बाद भी चादर, चोलपट्टा एवं मुहपत्ति अग्नि में अक्षुण्ण रही जो आज भी जैसलमेर के ज्ञान भण्डार में सुरक्षित है। आज जो दिख रहा जैन समाज उन्हीं के परिश्रम का परिणाम है।

श्री नूतनप्रियाश्रीजी म. ने कहा कि उन्होंने कई तीर्थों की स्थापना, शास्त्रों की रचना, स्तवन, टीका आदि का निर्माण कर शासन की, ज्ञान भण्डार की अभिवृद्धि की। एकावतारी ऐसे महान गुरुदेव को हम भाव से श्रद्धा सुमन समर्पण कर उनके बताये मार्ग पर अग्रसर हो। कार्यक्रम का संचालन अरविन्द कोठारी ने किया।

रतलाम में

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ ट्रस्ट के तत्वावधान में पूज्या साध्वी डॉ. सुरेखाश्रीजी म. आदि ठाणा-5 के पावन सानिध्य में परम पूज्य युगप्रधान दादा श्री जिनदत्तसूरिजी म.सा. की 860 वीं स्वर्गारोहण जयंती भाव पूर्वक मनाई गई।

दोपहर में श्री कोटा वाला बाग जैन मंदिर दादावाड़ी में महिला मंडल द्वारा दादा गुरुदेव की संगीतमय पूजा पढ़ाई गई। जिसका लाभ भी सज्जनसिंह, राजेन्द्रसिंह चोरड़िया परिवार ने लिया। संचालन हेमन्त बोथरा ने किया।

जयपुर में

जैन धर्म के जंगम युगप्रधान प्रथम दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि के 860 वीं स्वर्गारोहण दिवस के उपलक्ष में गुणानुवाद सभा विचक्षण भवन में परम पूज्य सज्जनमणि श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्याएं श्री शीलगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 के सानिध्य में रखी गयी। सर्वप्रथम संजय छाजेड़ ने दादा गुरुदेव का भजन व प.पू. श्री श्रद्धान्विताश्रीजी म. ने युगप्रधान पद की महत्ता बताते हुये कहा कि शास्त्रों में उल्लेख है कि जैन परम्परा में इस पंचम आरे में 2004 युगप्रधान होंगे। जिनमें दादा जिनदत्तसूरि 39 वें युगप्रधान हुये। श्री शीलगुणाश्रीजी म. ने कहा कि बाल्यकाल में दीक्षा के पश्चात् गुरुवर ने जैन धर्म का प्रचार करते हुए करीब 1,30,000 श्रावकों को जैन धर्म की सच्ची शिक्षा दी। -अनुप कुमार पारख

मुम्बई महानगर में

मुम्बई में दादा गुरुदेव युगप्रधान, जन-जन के श्रद्धा केन्द्र श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी म. की पुण्यतिथि पर पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका सुलोचनाश्रीजी म., पू. सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या पू. डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. के मार्गदर्शन में दादा गुरुदेव की रथयात्रा 8 जुलाई को प्रात: 9 बजे जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ सांचौर एवं खरतरगच्छ संघ मुम्बई की उपस्थिति में डॉ. विल्सन स्ट्रीट कुशल भवन से प्रारम्भ हुई।

श्री महावीर स्वामी देरासर पायधुनी में चातुर्मास हेतु विराजमान प.पू. प्र. श्री कीर्तिप्रभाश्रीजी म. की शिष्याएँ भी संघ की आग्रहभरी विनंति से रथयात्रा में पधारी।

सर्वप्रथम रथयात्रा खेतवाड़ी होते हुए माधवबाग पहुँची। वहाँ सामुहिक दादागुरु के इकतीसे का पाठ तथा आरती हुई। तत्पश्चात् रथयात्रा विट्ठलवाड़ी, गुलालबड़ी होती हुई महावीर स्वामी देरासर पायधुनी पहुँची। तीनों संघ (पायधुनी संघ, मुम्बई संघ सांचौर संघ)का मिलन हुआ। सामूहिक श्रद्धांजली सभा आयोजन हुआ। जितेश भाई, खरतरगच्छ मुम्बई संघ के अध्यक्ष मांगीलालजी एवं युवाहृदयी प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये। साध्वी चारित्रनिधिश्रीजी ने संगीत के स्वरों एवं ज्ञाननिधिश्रीजी म. ने अपने भावों को प्रस्तुत किया और अंत में प.पू. डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ने गुरु की महिमा बताते हुए कहा- महानता न आकाश से उतरती है और न ही महानता धरती से प्रगट होती है यह तो साधक की साधना का परिणाम है। हम सभी गुरुदेव के द्वारा बताये मार्ग का आचरण करें, उनके गुणों को अपने भीतर उतारने की कोशिश करें। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ मुम्बई की ओर से 5 लक्की ड्रा एवं लडडू की प्रभावना की गई।

-मुमुक्षु कल्पना सिंघवी, शिल्पा बालड़

तिरूपात्तुर में प्रवेश का ठाट

पूजनीया धवल यशश्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्याएं साध्वी श्री मयुरप्रियाश्रीजी म., साध्वी श्री तत्त्वज्ञलताश्रीजी म., साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म. का चातुर्मास प्रवेश धुम-धाम से हुआ। शोभायात्रा के बाद धर्मसभा आयोजित की गयी। जिसमें पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा संवाद और गीतिका की प्रस्तुति दी गयी। इस अवसर साध्वीश्री ने कहा कि चातुर्मास को सफल बनाना है तो हमें जीवन में परिवर्तन करना होगा। तपस्या कर अपनी आत्मा पर लगे कर्मों की निर्जरा करनी होगी। अभी तिरूपात्तुर में वीसस्थानक तप गतिमान् है जिसमें 25 आराधक जुडे है। बडी तपस्या की भी होड़ लगी है। **-आर.सुषमा कवाड**

डौण्डीलोहारा में चातुर्मास प्रवेश संपन्न

डौंडीलोहारा में प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म. की शिष्याएं विदुषी साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. आदि ठाणा का चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। घर-घर के सामने रंगोली, स्वागत व साध्वियों के नगर प्रवेश मार्ग पर बैनर झण्डे आदि लगाये गये थे। गुरूवर्या प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म.सा. के दीक्षा दिवस को बधाते हुए कुशल निपुणा अतिथि गृह का लोकार्पण साध्वी वृन्दों के मंगलपाठ के पश्चात अतिथि श्री मोहनलाल, मदनलाल पारख जगदलपुर निवासी ने किया। **-राजेन्द्र पारख**

दादावाड़ी का शिला स्थापन सम्पन्न

पुज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी महाराज साहेब की प्रेरणा से एवं साध्वीवर्या श्री गुणरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में नवनिर्मित आदिनाथ जिन मंदिर एवं कुशल गुरुदेव दादावाड़ी बनाने का संघ द्वारा निर्णय लिया गया। पुज्य गुरुदेव ने खाद व शिला स्थापन का मुर्हूत्त संघ को प्रदान किया। संघ ने 6 जून 2014 को खाद मुर्हूत्त व 7 जून 2014 को शिला मुर्हूत्त संघ द्वारा बड़े उल्लास से सम्पन्न करवाया।

मंदिर की मुख्यशिला का लाभ श्री तेजपालजी, केशरीमलजी छाजेड़ परिवार ने लिया। इसी प्रकार दादावाड़ी की मुख्य शिला का लाभ अशोक कुमारजी डागरीया परिवार द्वारा लिया गया। मुख्य हाल का लाभ श्री गोपावत परिवार एवं श्री गोरधनलालजी बाफना परिवार द्वारा लिया गया। सर्वसम्मति से भी चन्द्रप्रकाश (चन्दू भाई) छाजेड़ अध्यक्ष मनोनीत किये गये।

नवसारी में तपस्या का अनूठा ठाट

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में नवसारी में चातुर्मास की आराधना अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ चल रही है।

पूज्यश्री की प्रेरणा से बडी संख्या में श्रेणि तप, सिद्धि तप आदि विभिन्न तप चल रहे हैं। जिसमें बडी संख्या में युवा वर्ग जुडा है। पूरे नगर में इस चातुर्मास की जोरदार चर्चा है।

जलगांव में विविध आयोजन

पूजनीया खान्देश शिरोमणि गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 नाशिक प्रतिष्ठा के पश्चात् चातुर्मास हेतु जलगांव नगर पधारे, जहाँ ता. 6 जुलाई को भव्य नगर प्रवेश संपन्न हुआ। तत्पश्चात् दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि विशिष्ट समारोह के साथ मनाई गई।

पूजनीया साध्वीश्री की निश्रा में हर रविवार को अष्टप्रकारी पूजा, सरस्वती महापूजन आदि विविध आयोजन हो रहे हैं। जिनमें उपस्थिति के कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। विशेषता यह है कि तपागच्छ, खरतरगच्छ, आंचलगच्छ सभी का आगमन हो रहा है।

जोधपुर में आराधना

पूजनीया प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया विदुषी साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री दीपमालाश्रीजी म. की पावन निश्रा में जोधपुर गुलाबनगर में चातुर्मास का अनूठा ठाट चल रहा है। दैनिक प्रवचनों के साथ हर रविवार को विविध आयोजन किये जा रहे हैं। ता. 20 जुलाई को गहुँली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ता. 27 जुलाई को अष्ट प्रकारी पूजा का सामूहिक आयोजन किया गया। विविध तप भी यहाँ चल रहे हैं।

जामनगर में चातुर्मास

पूजनीया गणरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्याएं साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश भव्य रूप से हुआ। धर्मसभा में श्राविकाओं द्वारा गीत गाया गया। इस अवसर साध्वीश्री ने कहा कि चातुर्मास तो धर्म आराधना की सिजन है। इससे जुडकर हमें अपनी आत्मा को निर्मल बनाना हैं। दस यतिधर्म तप गतिमान् है जिसमें 22 आराधक जुडे है। **-आर.सुषमा कवाड़**

अहमदाबाद में गुरू गौतमस्वामी महापूजन १७ अगस्त को

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. की प्रेरणा से स्थापित श्री कुशल युवा परिषद् अहमदाबाद द्वारा गुरू गौतमस्वामी महापूजन 17 अगस्त को शाहीबाग स्थित ओसवाल भवन में आयोजित होगा।

पूज्य मुनिराज श्री कुशलमुनिजी म. आदि साधु-साध्वी भगवंत निश्रा प्रदान करेंगे। महापूजन पढाने के लिये श्री मनोजकुमारजी हरण आयेंगे। यह पूजन 108 जोडों के साथ पढाया जायेगा। कार्यकर्त्ताओं में उल्लास का वातावरण बना हुआ है। **-भैरू लुणिया**

श्री मिथिला तीर्थ शिलान्यास

सीतामढ़ी-(25 मई, 2014)19वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथजी व 21वें तीर्थंकर श्री नमिनाथजी के 4-4 कल्याणकों अर्थात् 8 कल्याणकों से पावन भूमि श्री मिथिला तीर्थ का शिलान्यास 25 मई, 2014 को शुभ मुहूर्त में सम्पन्न हुआ। जैन श्वेताम्बर कल्याणक तीर्थ न्यास के तत्वावधान में जिनालय व धर्मशाला निर्माण श्रेष्ठिवर्य श्री हरखचन्दजी नाहटा परिवार के सौजन्य से हो रहा है।

कुशल वाटिका ध्वजा के उपलक्ष में पूजनीया बहिन म डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी की प्रेरणा से जहाज मंदिर मासिक पत्रिका को सादर भेंट

रू. 5100/-
श्रीमती मथरीदेवी विरधीचंदजी छाजेड़ परिवार
शा. भंवरलाल-श्रीमती सुआदेवी छाजेड़
ओमप्रकाश, अशोक छाजेड़
बाड़मेर-मुम्बई

रू. 2100/-
श्रीमती लालीदेवी भगवानदासजी सेठिया परिवार
शा. बाबूलाल-श्रीमती निर्मलादेवी सेठिया
जितेन्द्र, अंकित सेठिया चौहटन-बाड़मेर

रू. 2100/-
श्रीमती मोहिनीदेवी भूरचन्दजी लुणिया परिवार
शा. बाबूलाल, भैरूचंद, नरपतचंद लुणिया
विशाल, कुणाल लुणिया, धोरीमन्ना-अहमदाबाद

रू. 2100/-
श्री गणेशमल नेमीचंद उदयराज भंवरलाल
महेशचंद ललितकुमार नारायणचंद
बेटा पोता शा. विरधीचंदजी गांधी धोरीमन्ना

नंदुरबार में दादा गुरुदेव को याद किया

जीवन में अनेक प्रसंग आते है बारबार, पर हम ऐसे मनाते है कि बस है व्यवहार।

पर दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि प्रसंग लगता है जैसे हो त्योहार क्यों न लगे,

ये ही तो है जिनशासन के अनमोल अणगार।

प्रात: 8:30 बजे पूज्य माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. एवं प. पू. डॉ. बहिन म.श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में अति हर्षोल्लास से दादावाडी एवं आसपास के परिसरों से गुजरकर शोभायात्रा आराधना भवन में श्री दादा गुरुदेव के गुणानुवाद निमित्त धर्मसभा में परिवर्तित हुई। मंगलाचरण के पश्चात् श्री पुखराजजी श्रीश्रीमाल काकाजी, बाबूलालजी मन्नाणी आदि श्रावकों ने दादा गुरुदेव के जिनशासन में विशेष योगदान की अनुमोदना की।

पूज्याश्री ने कहा कि दादागुरुदेव, किसी आचार्य या व्यक्ति मात्र का परिचय नहीं है। ये तो वो हस्ती है जो आज हमारे रोम-रोम में जिनशासन के प्रति श्रद्धा और विश्वास के पर्याय के रूप में बस गई है।

वैसे तो गुरुदेव के सर पर कोई ताज नहीं है, पर ऐसा कोई भी दिल नहीं जिस पर गुरुदेव का राज नहीं है।

अंत में मांगलिक के बाद में दादा गुरुदेव के भक्तों की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन संपन्न हुआ एवं दिनांक 7 जुलाई की धर्मसभा में आगमवाणी सूत्र वहोराने का लाभ श्री तखतमलजी केशरीमलजी सालेचा परिवार ने लिया।

-श्री नंदुरबार जैन श्वे. मू.पू.संघ

हुबली में दीक्षाएँ व दादावाड़ी प्रतिष्ठा 6 दिस. को

श्री आदिनाथ जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी का निर्माण कार्य पिछले 5 वर्ष से गुब्बर रोड पर चल रहा है।

6 जुलाई को प्रतिष्ठा मुर्हूत्त प्राप्त करने हेतु हुबली से बड़ी संख्या में सदस्य इचलकरंजी नगर पहुंचे। मुथा बाघमलजी भूराजी बाफणा परिवार ने उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. से मुर्हूत्त प्रदान करने की विनती की। उपाध्याय प्रवर ने इचलकरंजी में विशाल जनसमुदाय के सामने लाभार्थी परिवार के ऊकचंद बाफणा को मुर्हूत्त पत्र दिया तथा रमेश बाफणा में मुर्हूत्त 6 दिसम्बर 2014 की उद्घोषणा की। मुहुर्त के उदघोषणा के साथ ही पूरे हुबली वासी खुशी से झुमने लगे।

इस अवसर पर विभिन्न नगरों से आयी 5 दीक्षार्थियों की दीक्षा भी हुबली में होने की घोषणा की गयी। गंगावती निवासी कुमारी ममता तेजराजजी बागरेचा, गदग निवासी कुमारी शिल्पा जसराज ओस्तवाल, हुबली निवासी कुमारी प्रिन्सी बाबुलाल कवाड़, बैंगलोर की दो सगी बहिने कुमारी प्रेमा एवं सुमित्रा मांगीलालजी जीरावला को मुहुर्त प्रदान किया गया। यह पाँचों दीक्षार्थी पिछले पांच वर्ष से साध्वी सूर्यप्रभाश्रीजी म. के पास धार्मिक अध्ययन कर रही है। सभी दीक्षार्थी मरुधर में गढसिवाना निवासी है।

इस पावन अवसर पर दादावाड़ी कार्यदर्शी पुखराज कवाड़ ने कहाँ कि करीब 6 साल पहले दादावाड़ी बनाने का सपना साध्वी पूर्णप्रभाश्रीजी म. ने जगाया था। साध्वी समुदाय के अथक प्रयासों से आज यह भव्य जिनालय एवं विशाल दादावाड़ी हमारे सामने है जिसकी प्रतिष्ठा उपाध्याय मणिप्रभसागरजी म. की निश्रा में होगी। हुबली वासियों के लिये अत्यंत सौभाग्य की बात है कि पाँच दीक्षाऐं भी प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर सुसम्पन्न होगी।

अध्यक्ष भीकचंद छाजेड़ ने दीक्षार्थी परिवार से कहाँ कि पूरे हुबली वासी आपको पूरी सुविधाऐं उपलब्ध करायेंगें। अत्यंत स्नेह एवं सम्मान के साथ धूमधाम से दीक्षार्थियों को महावीर मार्ग की ओर प्रस्थान करायेंगें।

-पुखराज कवाड़

भारत विकास परिषद्

भारत विकास परिषद् चेरिटेबल ट्रस्ट सांचोर द्वारा संचालित प्राथमिक हॉस्पीटल द्वारा विकलांग सहायता केन्द्र पर 640 मरीजों का स्वास्थ परीक्षण करके नि:शुल्क दवाई उपलब्ध करवाई गई। जुन 2014 में फीजियोथैरेपी सेंटर के अन्तर्गत 282 मरीजों को यह सेवा प्रदान की गई। विकलांग सहायता केन्द्र एवं पुनर्वास केन्द्र पर 39 विकलांग, जिनमें 11 को कृत्रिम पैर व हाथ, 11 को स्टीक व बैशाखी तथा 17 अंगों को रिपेयर कर लाभान्वित किया गया।

मुम्बई में चातुर्मास की धूम

धर्म नगरी मुंबई में श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्त्वावधान में आयोजित प. पू. साध्वी गणरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी डॉ.श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. पू. प्रिय श्रेष्ठांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में धर्म आराधना का ठाट लगा है। प्रतिदिन गुरुवर्याश्री के श्रीमुख से तलस्पर्शी प्रवचन हो रहे हैं, जिसका लाभ सैंकडों श्रावक श्राविका ले रहे हैं। प्रति शनिवार महिलाओं के लिए व प्रति रविवार बच्चों के लिए विशेष शिविर का आयोजन होता है। शिविर में महिलाओं एवं बच्चों का उत्साह सराहनीय है। प्रति रविवार विभिन्न विषयों पर प्रसंगोपात प्रवचन के साथ कई कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है।

13 जुलाई को मातृ पितृ वंदनावली कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पूज्य साध्वीजी ने जीवन में माता-पिता के महत्व को समझाया। प्रवचन के पश्चात् बालक-बालिकाओं द्वारा संगीतमय प्रस्तुति की गयी जिसकी सभी ने बहुत अनुमोदना की।

26 जुलाई को जैन धर्म पर आधारित फैंसी ड्रेस कॉम्पिटीशन आयोजन में बच्चों का उत्साह अविस्मरणीय था। कोई राजुल बना था तो कोई नेमकुमार। कोई चंदनबाला, कोई पुणिया श्रावक। 50 बालक-बालिकाओं ने इसमें भाग लिया। सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

दि. 27 जुलाई को रवि पुष्य नक्षत्र के अमृत सिद्धि योग के पावनकारी दिवस पर मां सरस्वती महाजाप का अनुष्ठान रखा गया। हर्षोल्लास से करीब 1000 श्रावक श्राविकाओं ने भाग लिया। पूज्याश्री के निर्देशन में चमत्कारी सरस्वती यन्त्र, रक्षा पोटली एवं सरस्वती लॉकेट पर जाप करवाया गया।

विट्ठलवाड़ी के प्रांगण में सुबह दस बजे से शाम छह बजे तक अखंड जाप चलता रहा। सरस्वती माता की प्रतिमा स्थापित करने का लाभ केशवणा निवासी श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी श्रीश्रीमाल परिवार ने लिया। कार्यक्रम में उपस्थित श्री रिखबचंदजी झाडचूर एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। पूरा सभामंडप सरस्वती मंत्र से गुंजायमान हो गया। सरस्वती माँ की प्रतिमा को घर ले जाने, माँ की आरती एवं जाप की प्रसादी का त्रिवेणी लाभ बालोतरा निवासी श्री अमृतलालजी पुखराजजी कटारिया संघवी परिवार ने लिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्री मणिधारी युवा परिषद्, मुंबई के कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

प्रेषक- धनपत कानुंगो मुंबई

अल्पसंख्यक संगोष्ठी संपन्न

चौहटन 17 जुलाई को पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. की निश्रा में स्थानीय जैन धर्मशाला में अल्पसंख्यक कल्याणार्थ योजनाओं का मार्गदर्शन व संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी कें मुख्य अतिथि डॉ. बी.डी. तातेड़ अध्यक्षता मुकेश जैन एडवोकेट, विशिष्ठ अतिथि डॉ. मोहनलाल डोसी एवं संजय बोहरा थे।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अल्प संख्यक कार्यक्रम अधिकारी लियाकत अली ने उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार ने अल्पसंख्यक समुदाय के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं लागू की है। अल्पसंख्यक समुदाय इन योजनाओं का ज्ञान प्राप्त करे एवं उन योजनाओं का लाभ उठावे। सरकार ने शिक्षा, रोजगार एवं अल्पसंख्यक समुदाय के संपत्ति की रक्षा के लिए विभिन्न प्रावधान कर रखे है जिनका अधिकाधिक लाभ उठाया जाना चाहिए। लियाकत अली ने विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की तथा उपस्थित जनसमुदाय की शंकाओं का समाधान भी किया। मुकेश जैन ने युवक महासंघ एवं अणुव्रत समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि सरकार ने अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए संविधान में विभिन्न प्रावधाान किए है तथा विभिन्न जनहित की योजनाएं लागू की इन योजनाओं का उठाया जाना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.बी.डी. तातेड़ ने कहा जैन समाज ने हमेशा देश एवं समाज निर्माण सहयोग प्रदान किया है। जैन समाज योजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोग प्रदान करें।

जैन श्रीसंघ चौहटन अध्यक्ष डॉ. मोहनलाल धारीवाल ने आंगतुक अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि चौहटन जैन समुदाय को अल्पसंख्यक योजनाओं की विस्तृत जानकारी नहीं होने से वे उनके लाभों से वंचित थे। इस संगोष्ठी के माध्यम से उन योजनाओं की जैन समुदाय को जानकारी होने से वे उनका लाभ उठा पायेंगे। इस अवसर पर आसुलाल धारीवाल, हीरालाल धारीवाल, गौतम भंसाली, कोमल धारीवाल, रचना मालू, रविना सेठिया, पवन मालू, जितेन्द्र बांठिया सहित बड़ी संख्या में समाज के प्रबुद्ध नागरिकगण सहित महिलाएं एवं बालिकाएं उपस्थित थी।

कुशल वाटिका में श्री रामपुरिया का स्वागत

श्री सम्मेतशिखर तीर्थ जैन श्वेताम्बर सोसायटी मधुवन के माननीय अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया के बाडमेर नगर में कुशल वाटिका पधारने पर संस्थान की ओर से हार्दिक स्वागत किया गया। कुशल वाटिका के अनूठे वातावरण को देखकर श्री रामपुरियाजी प्रसन्न हो उठे। और उन्होंने संस्थान की प्रगति की कामना की। स्वागत के अवसर पर उपाध्यक्ष श्री द्वारकादासजी डोसी, निर्माण मंत्री श्री शंकरलालजी धारीवाल, मंत्री श्री रतनलालजी संखलेचा, सह कोषाध्यक्ष श्री बंशीधरजी बोथरा, प्रचार मंत्री श्री केवलचंद छाजेड उपस्थित थे।

श्रावकरत्न संघवी श्री छाजेड़ की श्रद्धांजली सभा

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ-मुम्बई के पूर्व अध्यक्ष, परम गुरुभक्त, वैयावच्चकारी, संघ निष्ठ श्रावक रत्न संघवी श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी छाजेड़ का आकस्मिक निधन मुम्बई में दि. 12.07.2014 को हो गया, इस निमित्ते संघ द्वारा सोमवार दि. 21.07.2014 को श्रद्धाजंली सभा का आयोजन माधवबाग (ए.सी.) हॉल में किया गया।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ मुम्बई के अध्यक्ष मांगीलालजी शाह, सचिव अमृतलालजी कटारिया, संस्थापक अध्यक्ष प्रकाशजी कानुंगो, पूर्व अध्यक्ष भंवरलालजी छाजेड़, मेनेजिंग ट्रस्टी राकेशजी मेहता एवं उपाध्यक्ष बाबुलालजी मरडिया, मांगीलालजी मौलाणी ने अपने संस्मरणों द्वारा सभा को सम्बोधित किया।

श्री जिन हरी विहार के अध्यक्ष विजयराजजी डोशी, भिवंडी खरतरगच्छ संघ अध्यक्ष पारसजी हाला वाले, भायंदर से नरेन्द्रजी कोचर, अखिल भारतीय छाजेड़ परिवार से दिनेशजी मेहता, सांचोरी ओसवाल समाज के संस्थापक अध्यक्ष नगराजजी जज साहेब, अध्यक्ष बाबुलालजी मेहता, नगर सेवक शांतिलालजी दोशी, श्रीमति सावित्रीजी कोचर, सोहनलालजी सेठिया, जैसलमेर से महेन्द्रजी बाफना, मलबार हिल विधायक मंगलप्रभातजी लोढ़ा, चंपावाड़ी (गढ़ सिवाना) अध्यक्ष वंशराजजी भंसाली एवं श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ-सांचौर के अध्यक्ष मनोहरजी कानुंगो ने पुखराजजी छाजेड़ की गुरुभक्ति, महेमान भक्ति एवं वैयावच्च की अनुमोदना से उपस्थित सम्पूर्ण सभा में शोक संतप्त लहर छा गई। प्रख्यात संगीतकार नरेन्द्र वाणीगोता ने ''चिट्ठी ना कोई संदेश, ना जाने वो कोनसा देश, जहां तुम चले गये'' ऐसा गाया कि कठोर से कठोर हृदय भी द्रवित हो गया। पूज्य साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. एवं श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. ने गुरुभक्ति की एवं वैयावच्च की ऐसी बातें बताई जिससे जनमानस झकझोर उठा। श्रद्धांजली सभा का संचालन प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल ने किया, जिन्होंने संघवी पुखराजजी छाजेड़ को शब्दों एवं संस्मरणों के माध्यम से श्रद्धांजली समर्पित की।

सादर श्रद्धांजली

- पादरू निवासी परम आदरणीय संघवी श्री पुखराजजी छाजेड का ता. 12 जुलाई 2014 को स्वर्गवास हो गया। वे जहाज मंदिर तीर्थ से पूर्ण रूप से जुडे हुए थे। वे गच्छ व शासन के समर्पित श्रावक थे। उनके स्वर्गवास से शासन व गच्छ को अपूरणीय क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।
- रायपुर छत्तीसगढ निवासी वयोवृद्ध श्रावक प्रवर श्री नेमीचंदजी बैद मुथा का स्वर्गवास हो गया। वे समाज के एक मान्य स्तंभ थे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।
- अहमदाबाद निवासी श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन का स्वर्गवास हो गया। वे वरिष्ठ पत्रकार थे। जिनेन्दु, यंगलीडर जैसे दैनिक समाचार पत्रों के वे संपादक, मुद्रक व मालिक थे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

- डेडियापाडा निवासी श्री पुखराजजी भंसाली का पावापुरी में स्वर्गवास हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति के सुश्रावक थे। प्रतिदिन मन्दिर में सेवा-पूजा व विहार दरम्यान पधारते साधु-साध्वीजी की वैयावच्च भावपूर्वक करते थे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली।

प्रश्नोत्तरी परीक्षा का हुआ आयोजन

चौहटन, 31 जुलाई को कुशल हेम बालिका मंडल द्वारा प.पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. की निश्रा में स्थानीय जैन धर्मशाला में जैन ज्ञान-दर्शन प्रश्नोत्तरी परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें काफी संख्या में परीक्षार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उक्त परीक्षा व्यवस्था में महावीर धारीवाल, पंकज धारीवाल, पीयुष धारीवाल का विशेष सहयोग रहा।

जहाज मंदिर पहेली-98 का सही उत्तर

1. आसोज ओली
2 ज्ञान पंचमी
3. पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
4. महावीर जन्म कल्याणक
5. मौन एकादशी
6. कार्तिक पूर्णिमा
7. चैत्री पूर्णिमा
8. फाल्गुन फेरी
9. मेरू तेरस
10. अक्षय तृतीया
11. श्रावण सुदि पंचमी
12. शासन स्थापना
13. पर्युषण
14. चैत्र ओली

पुरस्कार विजेता

दीपक कोचर, नंदूरबार

छह प्रेरणा पुरस्कार- पिस्ता गोलेछा-जयपुर, कंवरलाल डागा-कांजूर मार्ग, शशि पींचा-धमतरी, गौतमचंद कोठारी- फलौदी, प्रीति लोढ़ा-सारंगखेडा, सुलोचना छाजेड़-चेन्नई।

इनके उत्तर पत्र त्रुटिरहित थे-मुनि विरक्तप्रभसागरजी इचलकरंजी, मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी इचलकरंजी, साध्वी प्रज्ञांजनाश्रीजी-नंदुरबार, निर्मला सिसोदिया-जयपुर, सुरेन्द्रसिंह कोठारी-रतलाम, रमेश प्रजापत-धानेरा, सीमा भण्डारी-ब्यावर, रक्षा भण्डारी-ब्यावर, गौतमचंद डाकलिया-पाली, घीसुलाल कवाड़-अहमदाबाद, मनोहरलाल झाबख-कोटा, पारसमल घीया-बैंगलोर, मंगलाबाई चतुरमुथा-सारंगखेड़ा, मीठालाल तातेड़-हुबली, मनीला पारख-जयपुर, संगीता बुरड-ब्यावर, सरला गोलछा-लालबर्रा, भाग्यवंतीबाई नाहटा-शाहदा, कमलेश भण्डारी-जयपुर, हर्षिता राखेचा-त्रिची, पारसमल जैन-बीजापुर, भाविक बांठिया-हैदराबाद, प्रियदर्शनी वेद-पनरूटी, आशा छाजेड़-जोधपुर, हर्षित ललवाणी-तिरपात्तुर, शोभा कोटडिया-त्रिची, विजयराज गुलेच्छा-बैंगलोर, सुशीला डागा-पाली, माही पटवा-जालोर, सरोज गोलछा-राजनांदगांव, मंजु संकलेचा-मालपुरा, दीप डोसी-मन्दसौर, प्रमिला बैंगानी-भीनासर, माना चतुरमुथा-खरीयार रोड, सोहन झाबक-बड़ौदा, सलोनी चोरडीया-खापर, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, मांगीलाल जैन-तलोदा, मधु खवाड़-मदनगंज, शकुन्तला सुराणा-जयपुर, हर्षा बैन बाफना-नंदुरबार, आयुष चिप्पड-प्रतापगढ़, कुसम बेंगानी-रायपुर, शोभा वेद-पनरूटी, सरीता जैन-रायपुर, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, प्रमिला मेहता-जयपुर, स्नेहलता चोरडीया-जयपुर, भाग्यवंती तातेड़-नंदुरबार, सुशीला जीरावला-जोधपुर, मनोरीबेन बाफना-नंदुरबार, किरण गोगड़-दुर्ग, रश्मि भंसाली-शहादा, धर्मिष्ठा बोथरा-खापर, सरसलता जैन-दिल्ली, पुष्पादेवी डोसी-ब्यावर, सुशीला भण्डारी-कोटा, मंजु कांस्टिया-कोलकाता, भीमसिंह छाजेड़-बून्दी, सीमा जैन-बीकानेर, दर्शन कोठारी-अमलनेर, सुशीला कोचर-अक्कलकुआ, सीमा जैन-जयपुर, निर्मला बच्छावत-फलोदी, तेजस बाफना-कोट्टुर, किरण वैदमुथा-रायपुर, सजन छाजेड़-कोटा, नैन्सी बोथरा-खेतीया, प्रेम दुगड़-जयपुर, रूचिका भंसाली-सांचोर, भुरचन्द मालू-जोधपुर, संगीता गोलछा-कोण्डागांव, सुचित्रा भंसाली-नौयडा, प्रियंका बच्छावत-जोधपुर, मधु जैन-ऊंटी, मीत गुलेच्छा-जोधपुर, विनिता बच्छावत-फलोदी, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, मोनीका गुलेच्छा-अक्कलकुआ, हर्षाली संकलेचा-अक्कलकुवा, नमिता जैन-उदयपुर, नीरज जैन-उदयपुर, कविता जैन-बामनिया, निर्मला जैन-उदयपुर, सुनिता जैन-जयपुर, इन्द्रादेवी संकलेचा-हैदराबाद, निकिता झाबक-ऊंटी, स्वाति कोचर-दुर्ग, गौतमचन्द बैद-कुरिजीपाड़ी, कुशल संकलेचा-अक्कलकुवा, प्रिया गुलेच्छा-खापर, अक्षय गुलेच्छा-खापर, मनीषा लूणिया-ऊंटी।

तत्त्व परीक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 100

प्रस्तुत पहेली में दो ग्रुप दिये गये हैं। एक ग्रुप में महापुरुषों के नाम है और दूसरे ग्रुप में तिर्यंच प्राणियों के नाम है। हर महापुरुष का किसी भी एक तिर्यंच प्राणी से किसी न किसी प्रकार से संबंध रहा हुआ है।

स्वाध्याय करें, चिन्तन में डूबे और खोजकर महापुरुष के सम्मुख खाली जगह में उनसे सम्बन्धित तिर्यंच प्राणी को अंकित करें। अठारह में से पन्द्रह सही होने जरुरी है।

तिर्यंच प्राणियों के नाम- अश्व, चींटी, बैल, मृग आदि, हरिण, सर्प, समडी (चिडियां), गाय, मृग, जटायु, क्रोंच, हाथी, कबूतर, मकोडा, सिंह, बकरी, मगरमच्छ, सियालनी, चीता।

उदाहरणार्थ- परमात्मा महावीर ⟶ सर्प (चण्डकौशिक)

1. सुकौशल मुनि ⟶ .....
2. नंदीषेण मुनि ⟶ .....
3. अवन्ति सुकुमाल ⟶ .....
4. राजकुमारी सुनंदा ⟶ .....
5. सम्राट् कुमारपाल ⟶ .....
6. मेतारज मुनि ⟶ .....
7. भगवान अरिष्टनेमि ⟶ .....
8. वासुदेव श्री कृष्ण ⟶ .....
9. बलभद्र मुनिवर ⟶ .....
10. राजा मेघरथ ⟶ .....

11. श्रीपाल → .....

12. मुनिसुव्रत स्वामी → .....

13. महासती सीता → .....

14. गर्दभाली मुनि → .....

15. धर्मरूचि अणगार → .....

16. अकबर प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि → .....

17. सती दमयन्ती → .....

18. परमात्मा आदिनाथ → .....

जहाज मन्दिर पहेली 100 इस पत्ते पर भेजे →

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ
डॉ. वनारसे हॉस्पिटल के पास, श्रीपाद नगर,
पो. इंचलकरंजी - 416115 जि. कोल्हापुर (महा.)

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 सितम्बर तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल अक्टूबर में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. जहाज मन्दिर पहेली प्रेषक इस पहेली की झेरॉक्स करवाकर भेजे।
7. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
8. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
शा. सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया (छबड़ा) ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | |

बहुरंगी दीपावली पंचांग हेतु आवश्यक निवेदन
(2014-2015)

रतनमाला श्री प्रकाशन, जहाज मंदिर, माण्डवला 343042 जि. : जालोर (राज.)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी जेबी पंचांग प्रकाशित होने जा रहे हैं।

पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा तैयार किये जाते ये पंचांग हर दृष्टि से उपयोगी है। इनका उपयोग दीपावली बधाई कार्ड की तरह होता है। अन्य कार्ड वगैरह लम्बे समय तक उपयोग नहीं हो पाते। जबकि ये पंचांग साल भर तक उपयोगी होते है।

परमात्मा श्री महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, श्री दादा गुरूदेव, पूज्य आचार्यश्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा., श्री नाकोडा भैरव, श्री घंटाकर्ण महावीर, श्री अंबिका देवी, श्री पद्मावती माता आदि के रंगीन चित्रों के अलावा साल भर का तिथि पत्रक, दैनिक नक्षत्र, दैनिक चन्द्र, शुभ दिन, अमृत सिद्धियोग, बिछुडा, पंचक, गुलिक कालम्, यमगंड कालम्, राहुकालम् आदि, चौघडिया, पच्चक्खाण का समय, कल्याणक पर्व दिन, सुभाषित, साल भर के पर्व दिवस आदि अत्यन्त उपयोगी सामग्री से यह पंचांग सुसज्जित होता है।

कुल 48 पेज का यह पंचांग लघु आकार में मुद्रित होता है जो जेब में बहुत आराम से रह सकता है। पूरा पंचांग महंगे आर्ट पेपर पर बहुरंगों में प्रकाशित किया जाता है।

पृष्ठ वृद्धि के साथ कागज, छपाई, पोस्टेज आदि में काफी मूल्यवृद्धि होने के कारण पचांग के मूल्य में थोडा परिवर्तन करना पडा है। इस वर्ष पंचांग का मूल्य (7.00 रु.) सात रूपये रखा गया है।

पंचांग प्रकाशन हेतु आदेश पत्र भिजवावें। 250 पंचांग के गणक में आदेश भेजा जा सकता है। इस वर्ष पूरा पंचांग रंगीन प्रकाशित होगा। आपका मेटर अंतिम कवर पेज पर रंगीन आयेगा। आप चाहे तो रंगीन फोटो भी छपवा सकेंगे। उसका कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं होगा।

पंचांग की राशि का ड्राफ्ट श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट के नाम से आई. सी. आई. सी. आई. जालोर शाखा (***IFSC CODE - ICIC0000653***) खाता नं. 065301000256 पर देय बनवाकर ट्रस्ट कार्यालय को शीघ्र भिजवावें, बैंक रसीद की छाया प्रति के साथ हमें भारतीय डाक से सूचना दें (माण्डवला में कोरियर सेवा उपलब्ध नहीं हैं।)

पंचांग प्रकाशन हेतु आदेश पत्र पूज्य गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. अथवा ट्रस्ट कार्यालय मांडवला को शीघ्र भेजने की कृपा करें।

पंचांग प्रकाशन हेतु संपर्क सूत्र

पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ
डॉ. वनारसे हॉस्पिटल के पास, श्रीपाद नगर,
पो. इंचलकरंजी - 416115 जि. कोल्हापुर (महा.)
फोन - 0230-2420700, मुकेश - 098251 05823
E-mail : jahajmandir99@gmail.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर, माण्डवला–343042, जि. : जालोर (राज.)
फोन : 02973–256107, 256192
डॉ. यू. सी. जैन : 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

हमारे पंचांग कुल [ ] प्रकाशित करावें। पंचांग में प्रकाशित करने हेतु मेटर इस प्रकार है।

एक पृष्ठ का मैटर

कृपया पंचांग हमें इस पते पर भिजवाये –

भेजने के पते में मोबाईल नं., फोन नं.
एवम् पीनकोड़ अनिवार्य रुप से लिखे

हस्ताक्षर

लिफाफे का मेटर

यदि लिफाफे नहीं चाहिये अथवा
कम चाहिये तो स्पष्ट रुप से लिखे।

आपके पते पर किस कोरियर की व्यवस्थित सेवा हैं यदि उसका नाम एवं फोन, मोबाईल नं. भी भेज सके तो प्रेषण में सहयोग रहेगा।

गुरु गौतम ने नित करुँ प्रणाम...

।। ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतस्वामिने नमः ।।
ॐ ह्रीं श्री अरिहंत उवज्झाय श्री गौतमस्वामिने नमः ।।
।। दादा श्री जिनदत्त-मणिधारी-कुशल-जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः ।।

जेहथी सीझे सयला काम...

श्री कुशल युवा परिषद्

अहमदाबाद द्वारा आयोजित

ओसवाल भवन, शाहीबाग के प्रांगण में

108 जोड़ों सहित श्री गौतम स्वामी पूजन

का

भव्य आयोजन

आशीर्वाद
प.पू. उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
निश्रा
प. पू. जयानन्दमुनिजी म. सा. के सुशिष्य
प. पू. कुशलमुनिश्री म. सा. आदि ठाणा

: विधिकारक :
सिरोही (राज.) निवासी शासनरत्न
श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण

: महापूजन स्थल :
श्री ओसवाल भवन
शाहीबाग, अहमदाबाद – 380 004

आधार स्तंभ
शा. बाबुलालजी, भैरुचन्दजी, नरपतजी लूणिया
शा. रतनलालजी, जगदीशचन्द्र, मिश्रीमलजी बोथरा
संघवी शा. अशोककुमारजी मानमलजी भंसाली

रत्न स्तंभ
शा. रतनलालजी हितेशकुमारजी बोहरा (हालावाला)
शा. बाबुलालजी केशरीमलजी बोथरा

आयोजक एवं निमंत्रक
श्री अहमदाबाद जैन श्वे. मू. खरतरगच्छ संघ की आज्ञा से
श्री कुशल युवा परिषद, अहमदाबाद
दादासाहेब पगला, नवरंगपुरा, अहमदाबाद

हार्दिक आमंत्रण.... पधारजो सा...

सम्पर्क सूत्र
रतन बोथरा – 94260 11536
विजयप्रकाश मालू – 94260 60240
हितेश बोहरा – 99244 77723
भैरू लूणिया – 94260 11311

जटाशंकर ड्यूटी पर जाने के लिये तैयार हो रहा था। वह पुलिस की नौकरी कर रहा था। हवलदार बना था। खाकी वर्दी धारण करके ज्योंहि उसने अपनी जेब में हाथ डाले तो वह चौंका!

उसे याद आया- कल शाम को ही तो एक दुकानदार से मैंने एक हजार रूपये की रिश्वत ली थी। वो रूपये इसी जेब में तो रखे थे। कहाँ गये!

वहाँ से सीधा घर आया था। बीच में गायब होने का कोई कारण नहीं। जेब कटी हुई भी नहीं है। इसका अर्थ है- रूपये घर में ही पार हुए हैं।

पर घर में तो मेरे और मेरी पत्नी के सिवाय और कोई है नहीं। लगता है- मौका देखकर श्रीमतीजी ने जेब साफ कर दी है।

खाकी वर्दी पहन कर हाथ में डंडा घुमाता हुआ अपनी पत्नी के पास पहुँचा। और डंडा घुमाता हुआ पुलिसिया भाषा में जोर से बोला- चोरी! और वो भी एक पुलिस ऑफिसर की वर्दी से! मैं तुम्हें इस अपराध के लिये गिरफ्तार करुँगा!

पत्नी पहले तो डर गई। यह क्या बोल रहा है! उसे लगा कि यह तो वास्तव में अभी पुलिस वाला बन गया है।

उसने तुरन्त अपने पास से 500 रूपये का नोट निकाला और कहा- ये लो! आधे तुम रख लो और मामले को रफा दफा कर लो।

जटाशंकर ने तुरंत 500 रूपये अपनी जेब के हवाले किये और प्रसन्न होता हुआ बाहर निकल गया। वह भूल गया कि यह किसी और का घर नहीं, खुद का ही घर है। वह अपना मूल परिचय भूल गया।

हम भी इसी प्रकार अपने मूल परिचय को भूला बैठे हैं। और अपने उस परिचय को ही अपना मानते हैं जो हकीकत में अपना है नहीं; कुछ समय के लिये मिला है। और मैं उस परिचय के आधार पर ही सारे कार्य करता हूँ।

जटाशंकर

जटाशंकर

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वात्सल्य का सागर 'भाया' - मुनि मेहुलप्रभसागरजी म.

पूज्य गुरुदेवश्री के सानिध्य में कितनी ही बार संघवी श्री पुखराजजी छाजेड भाया से मिलना हुआ। मेरी दीक्षा के अवसर पर पालीताना ही थे। मेरी दीक्षा के बाद पहला चातुर्मास मुंबई में हुआ। उनका पूरा समय चातुर्मास की व्यवस्था में बीतता था।

पालीताना चातुर्मास में प्रतिक्रमण जब भी मेरे साथ करते, वे पहले ही बोल देते- मेहुल म. आज आनंदघनजी या देवचन्द्रजी रचित स्तवन गाना है। उन स्तवनों में बडा ही आनंद आता है। वे अध्यात्म के रसिये थे। तत्वज्ञान में रूचि थी। आत्म-स्वाध्याय में वे मगन हो जाते थे। उन्हें उन स्तवनों के अर्थ सीखने थे। स्तवन तो कई याद कर लिये थे। वे मेरे पास से अर्थ की पुस्तक भी स्वाध्याय के लिये लेकर गये थे। उनके रोम रोम में परमात्म भक्ति थी! दादा गुरुदेव के प्रति अटूट आस्था थी। अपने माता पिता के परम भक्त भाया साधु साध्वियों के प्रति वैयावच्च भक्ति कूट कूट कर भरी थी। उनकी सबसे बडी विशेषता थी कि वे बडे साधुओं के साथ साथ छोटे साधुओं की भी पूरी सार सम्हाल रखते थे। वे वात्सल्य का सागर थे। उनकी अकल्पित विदाई हृदय को भयंकर पीडा दे रही है।

इचलकरंजी में चातुर्मास प्रवेश की झलकियां

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

इचलकरंजी में चातुर्मास प्रवेश की झलकियां

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरामोहल्ला, शिवाजी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माण्डवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com
www.jahajmandir.blogspot.in

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408